ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

जून, 2013

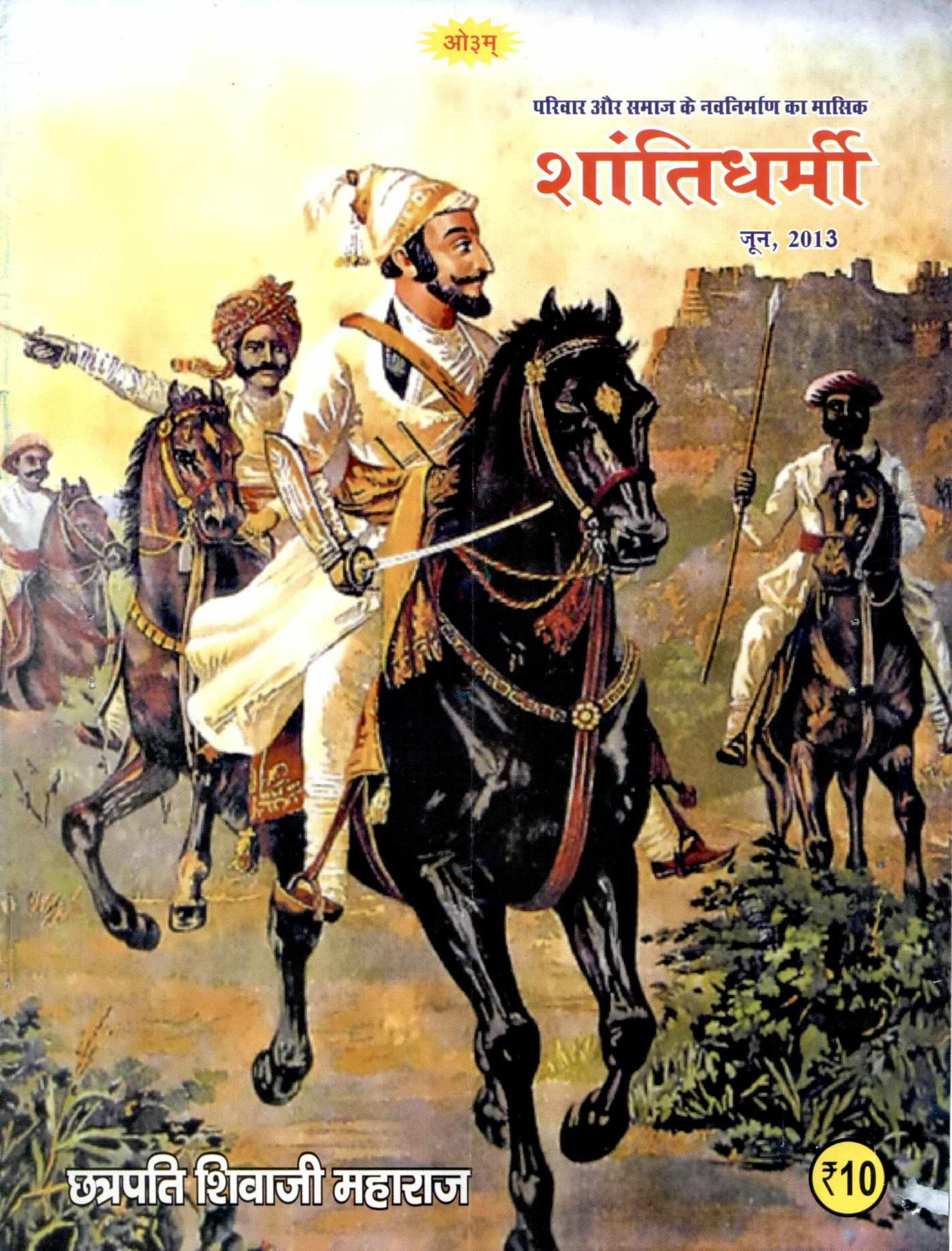

छत्रपति शिवाजी महाराज

₹10

पाकिस्तानी हिन्दुओं के यज्ञोपवीत संस्कार में आर्य समाज के पदाधिकारी

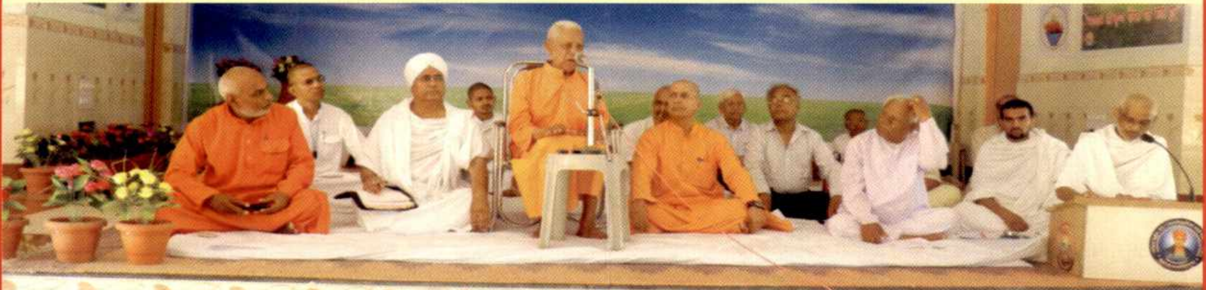

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट तथा दर्शन योग महाविद्यालय के द्वारा दिनांक १२ से १६ मई २०१३ को किशोर चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों को धार्मिक शिक्षा के अतिरिक्त इतिहास, ईश्वर उपासना, यज्ञ, आसन-व्यायाम, झूडो, कराटे, तैरना, शूटिंग तथा प्रवचन आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित आदि शिक्षा दी गई। ब्र. अरुण जी आर्यवीर जी की अध्यक्षता में यह शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर के समापन समारोह में आर्शिवाद देते हुए स्वामी सत्यपति जी। इसका विवरण बाद में दिया जायेगा।

हरियाणा स्टेट मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप में रजत पदक प्राप्त मा० दयाराम आर्य को सम्मानित करते स्टाफ सदस्य

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र में कन्याओं को सम्मानित किया गया।

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

जून, २०१३

वर्ष : १५ अंक : ५ ज्येष्ठ २०७०
सृष्टि संवत्-१९६०८५३११४, दयानन्दाब्द : १९०

सम्पादक : चन्द्रभानु आर्य
(चलभाष ०८०५९९-६४३४०)
संयुक्त सम्पादक : सहदेंव समर्पित
(चलभाष ०९४१६२-५३८२६)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर
कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

मूल्य

एक प्रति	:	१०.०० रु०
वार्षिक	:	१००.०० रु०
आजीवन	:	१०००.०० रु०

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ९४१६२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

प्रेरणा स्तम्भ

जो इंसान सच्चा नहीं है, वह न तो अधिक देर तक गरीबी को झेल सकता है और न ही अमीरी को संभाल सकता है, क्योंकि चरित्र के अभाव में गरीबी उसे निष्ठुर बना देती है और अमीरी बर्बर।

–कन्फुशियस

क्या? कहाँ?....

आलेख

जीवन यात्रा	६
कैसे सुरक्षित रहेगी नारी?	९
मन वचन कर्म से पवित्र ही चरित्रवान् है।	१३
बढ़ते स्वार्थ से पतले होते रिश्ते	१५
वीर मराठों का विजय अभियान	१६
सुखी एवं दीर्घ जीवन कैसे प्राप्त हो?	२१
इन्द्रिय स्पर्श : क्यों और कैसे? (संध्या रहस्य)	२३
गरमी में होने वाले उपद्रव (स्वास्थ्य चर्चा)	२५
दुनिया मान रही संस्कृत का महत्त्व (अन्ततः)	३४

कहानी/प्रसंग

प्रेम का वास-२०, दरवाजा-२७, तीन प्रेरक प्रसंग-२८

कविताएँ- १२, २७, २९

स्तम्भ-आपकी सम्मतियाँ ५, अनुशीलन, सोम सरोवर ७, चाणक्य नीति, अमृतवचनावली ८, बाल वाटिका २६, भजनावली २९

वेद-विचार

सामवेद आग्नेय पर्व

पद्यानुवाद : स्व० आचार्य विद्यानिधि शास्त्री

अगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम्।
य स्म श्रुतर्वन्नाक्ष्र्ये बृहदनीक इध्यते।।८९

वृत्रविघातक[1] उच्च गुणों से युक्त अग्नि को हम पावें।
पूर्णतया स्तवनीय[2] वही है उसकी ही स्तुतियाँ गावें।।
जो चमके श्रुतिपथ-अनुगामी[3] श्रोत्रिय या क्षत्रिय घर में।
बहुत बड़ी रणसेना वाले ऋक्षसमान[4] बली नर में।।

शब्दार्थ : १ बुराई नष्ट करने वाला २ स्तुतियोग्य ३ वेद मार्ग पर चलने वाला ४ वेदपाठी

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

भक्ति का उद्देश्य

❑ चन्द्रभानु आर्य

यदि हम ईश्वर को जानते और मानते हैं तो हमारे जीवन में ईश्वरीय प्रभाव स्पष्ट नजर आएगा। पिछले अंकों से शांतिप्रवाह में इस विषय में विचार हो रहा है। ईश्वरीय प्रभाव का अर्थ है कि हमारे मन, वचन, कर्म पवित्र होंगे और हमारे पवित्र आचरण की सुगंधि दूसरों को भी प्रेरित करेगी। यदि हम अपनी भावनाओं के अनुरूप ईश्वर को बनाना चाहेंगे तो सब कुछ गड़बड़ हो जाएगा। अत: हमें अपनी भावनाएँ ईश्वर के अनुरूप बनानी होंगी। जो हम ईश्वर को सर्वव्यापक न जानकर एक स्थान या लोक में रहने वाला मान लेंगे तो फिर आवश्यकता पड़ने पर उसके आने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। यदि हम मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च आदि स्थानों को उसके निवास स्थान मानेंगे तो हमारी धार्मिक भावनाएँ केवल उनके अन्दर जाने या उनके आगे से निकलने के समय तक ही सीमित रहेंगी। यदि हम 'ईशावास्यम्' (सारा जगत् ईश्वर से ओतप्रोत है) को समझ लेंगे तो वही भावनाएँ प्रत्येक काल में प्रत्येक स्थान में बनी रहेंगी।

अपने जीवन में ईश्वरीय प्रभाव लाने के लिए आस्तिक लोग ईश्वर की भक्ति करते हैं। वास्तव में हमारे सामने यह सबसे बड़ा प्रश्न है कि हमारा भक्ति करने का उद्देश्य क्या है? भक्ति में हम ईश्वर की स्तुति करते हैं अर्थात् उसके गुणों का चिन्तन करते हैं। जब हम रचना का चिन्तन करते हैं, उसके अनन्त बल और अनन्त ज्ञान का विचार करते हैं, उसके न्याय और दया को देखते हैं तो हमारा ईश्वर में प्रेम बढ़ता है और यह स्वाभाविक बात है कि जिससे हम प्रेम करते हैं तो उसके गुणों का प्रभाव भी हमारे ऊपर होने लगता है। बच्चा अनुकरण करके ही सीखता है। ईश्वर अनन्त सामर्थ्यवान् है। जीवात्मा अल्प सामर्थ्य वाला है। उसके सारे गुण तो जीवात्मा ग्रहण नहीं कर सकता पर उसके गुण कर्म स्वभाव में सुधार तो आता ही है।

अब यहाँ यह प्रश्न आता है कि सर्वव्यापक को एकदेशी मानने वाले उसकी प्रशंसा करते हैं या निन्दा करते हैं? किसी के गुणों को गुण कहना तो उसकी स्तुति है। किसी के गुणों को बढ़ा चढ़ा कर कहना उसकी खुशामद या चाटुकारिता हो सकती है, पर किसी के गुणों को कम करके कहना तो उसकी निन्दा ही है। आज की भक्ति में यही हो रहा है। जो परमेश्वर इस सृष्टि के कण-कण में व्यापक है उसको एकदेशी मानना, न्यायकारी को पक्षपाती कहना यह ईश्वर की निन्दा ही तो है। एक भक्त कहता है कि मेरे बेटे को बिजली के तार ने पकड़ लिया था उसको आकाश मार्ग से आकर भगवान ने बचा लिया। कहने को तो यह बात सामान्य सी लगती है। पर इसमें परमेश्वर का कितना अवमूल्यन हुआ है इसको केवल स्वाध्यायशील भक्त ही समझ सकता है। पहले तो वह भगवान अल्पज्ञ था कि जब बच्चा मरणासन्न हुआ तब उसको पता चला। दूसरे वह अल्प सामर्थ्यवान् हुआ क्योंकि बिना स्वयं जाए उसको बचा न सका। जब वह बिना स्वयं जाए उसको पकड़वा सकता है तो स्वयं जाए बिना छुड़वा क्यों नहीं सकता? तीसरे वह अन्यायकारी हुआ। प्राणी के सुख दु:ख परमेश्वर की व्यवस्था से उसके कर्मों के फल ही होते हैं। वह किसी को छुड़वा दें किसी को मरने दे? परमेश्वर ने इतनी विशाल, विचित्र सृष्टि की है, और कितना नियमित और व्यवस्थित संचालन हो रहा है, सृष्टि के कण कण में ईश्वरीय चमत्कार नजर नहीं आता और पेट दर्द ठीक हो जाने में ईश्वरीय चमत्कार नजर आता है यह ईश्वर की निन्दा है या प्रशंसा?

जब हम ईश्वर की स्तुति करते हैं तो उसकी बुद्धिपूर्वक रचना और उसके महान् गुणों को देखकर हमारा ईश्वर से प्रेम बढ़ता है, हमारे गुण कर्म स्वभाव सुधरते हैं। जब हम पुर्ण पुरुषार्थ के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं तो सबसे पहले तो हमारे अभिमान की समाप्ति होने लगती है। साथ ही हमारा कार्य करने में उत्साह होता है कि हम ईश्वर की आज्ञा के अनुसार पूर्ण पुरुषार्थ कर रहे हैं तो ईश्वर की कृपा से हमें सफलता अवश्य मिलेगी। ईश्वर उसी की सहायता करता है जो ईश्वर की आज्ञा के अनुसार पुरुषार्थ करता है। जब हम परमात्मा का सान्निध्य पाने के लिए योग का अनुष्ठान करते हैं तो परमात्मा की प्राप्ति होती है। परमेश्वर तो पूर्ण पुरुषार्थ करते हुए सौ वर्ष तक जीने की आज्ञा देता है, परमेश्वर कभी अकर्मण्य रहने का उपदेश नहीं देता। परमेश्वर की व्यवस्था में जो कार्य ईश्वर के हैं वही ईश्वर करता है, जो कार्य मनुष्य के करने के हैं वे मनुष्य को ही करने हैं। परमेश्वर ने इतना सुन्दर और सामर्थ्यवान् शरीर और बुद्धि प्रदान कर दी है, अब वह भक्त की रसोई बनाने आएगा तो यह सब क्या काम आएगा। ईश्वर का ईश्वरत्त्व इस बात में है कि वह सब जीवों को उनके कर्मों के ठीक-ठीक फल दे। यदि वह कर्मों का फल देने में पक्षपात करेगा तो उसका न्याय समाप्त हो जाएगा। इसलिए परमात्मा सच्ची भक्ति द्वारा आत्मकल्याण का प्रयत्न करना चाहिए।

आपकी सम्मतियाँ

मई अंक में नरेन्द्र आहुजा विवेक जी का लेख बहुत प्रेरक है। 'आत्मविश्वास' सफलता का आधार तो है ही पर विवेक जी ने इसे आध्यात्मिक आधार देकर नया आयाम दे दिया है। धन्यवाद! यह पूरा अंक पौरुष को समर्पित लगता है। डॉ॰ विवेक आर्य व राजेशार्य के लेखों के अतिरिक्त मुझे डॉ॰ भवानीलाल भारतीय जी के लेख ने अत्यंत प्रभावित किया। एक संन्यासी के उद्गार वास्तव में अनुकरणीय हैं। आज जाति को जीवन की आवश्यकता है। धर्म की रक्षा के लिए पौरुष की हर युग में आवश्यकता रही है। कैसी विडम्बना है कि आज अर्जुन और राम की सन्तान, सांगा और प्रताप के अनुयायी भीरू होकर हर क्षेत्र में मार खा रहे हैं। ये विचार गुर्दा रगों में ऊष्ण रक्त का संचार करने वाले हैं।

प्रा॰ अमनदीप सिंह तंवर
आई टी आई के सामने, असन्ध रोड, जींद-१२६१०२

शांतिधर्मी के नियमित पठन के अनन्तर मैं पाठकों से अपने विचार सांझा करना चाहूंगा। पत्रिका का प्रत्येक लेख पठनीय, मननीय और आचरण में लाने योग्य है। परिवार में सब सदस्यों के मतलब की पत्रिका। चाहे बालक पढ़ें तो बाल-वाटिका का लाभ उठावें। अध्यात्म में रूचि रखने वाले अध्यात्म सरोवर में गोता लगावें। जो कर्मठ युवक हैं उन्हें सन्मार्ग दिखाती है। भजनावली के माध्यम से जन जागरण में सहयोगी है। महापुरुषों के जीवन चरित्र से उनके आदर्शों पर चलने को प्रेरित करती है। वेद के मार्ग पर चलने के लिए शांतिधर्मी अवश्य पढ़ें। अध्यात्म सरोवर में सराबोर होना चाहते हैं तो पं॰ चमूपति का संध्या रहस्य अवश्य पढ़ें, भटकों को राह दिखावें। प्रत्येक माह स्वास्थ्य संबंधी जीवनोपयोगी बातें पढ़ें। बच्चों के ज्ञानवर्धन व मनोरंजन कराने में बालवाटिका का कोई सानी नहीं। प्रेरक प्रसंग नवयुवकों में विश्वास जगाते हैं। घर के प्रत्येक सदस्य के पढ़ने हेतु पत्रिका है। नवीनतम वैज्ञानिक जानकारी दे रही है। अब तो शोध भी हो चुका है, जिसने आर्य द्रविड के भेद को नकार दिया है। इतनी विशेषताएँ होने के कारण पत्रिका को अवश्य पढ़ें और पढ़ावें तथा प्रत्येक पाठक कम से कम दो नवीन नियमित सदस्य अवश्य बनावे।

ईश्वर सिंह आर्य प्रधानाध्यापक,
ग्रा॰ मस्तापुर, जिला रेवाड़ी-१२३४०१

शांतिधर्मी के मई अंक का आद्योपान्त अवलोकन किया। बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक अंक है। हाल ही में एक सांसद द्वारा 'वन्दे मातरम्' की अवहेलना के संन्दर्भ में डॉ॰ विवेक आर्य का लेख बहुत ही रोचक, प्रेरक और ज्ञानवर्धक है। डॉ॰ जी ने इतिहास की खोजपूर्ण जानकारी दी है और वन्देमातरम् का विरोध करने वालों के मुंह पर करारा तमाचा मारा है। मैं इस अतिप्रशंसनीय लेख के लिए विवेक जी को साधुवाद और आशीर्वाद देता हूँ। इसके अतिरिक्त राजेशार्य आट्टा का लेख 'महाराणा प्रताप : कहानी और इतिहास में' एक खोजपूर्ण और शोधपूर्ण लेख है। महाराणा प्रताप के बारे में प्रचलित अनेक भ्रांतियों का निवारण करता है। पं॰ चमूपति जी का आध्यात्मिक मार्गदर्शन बहुत अच्छा चल रहा है। स्वास्थ्य चर्चा में पानी के बारे में उपयोगी जानकारी है। बाल वाटिका की रचनाएँ सुन्दर हैं। 'हास्यम्' ने तो खिलखिलाने पर मजबूर कर दिया।

रामप्रताप कटारिया वरिष्ठ लेखा निरीक्षक (निवृत्त)
ग्राम पोस्ट पाल्हावास, जिला रेवाड़ी-१२३४०१

मई अंक रोचक और ज्ञानवर्धक है। कहानियाँ भी हैं। कविताओं की कमी खटकती है। बाल वाटिका का प्रस्तुतिकरण अति प्रशंसनीय है। अब की बार तो चींटियों ने भी पाठ पढ़ाया। वास्तव में हम सृष्टि के छोटे से छोटे प्राणी से भी कोई न कोई शिक्षा ले सकते हैं। 'दान का अर्थ' कहानी धन के सदुपयोग की शिक्षा देती है। जिस दान से किसी का जीवन बदल जाए उससे बड़ा दान और क्या हो सकता है!

विजय सिंह राठौर
भीमगंज मण्डी, कोटा ३२४००२ (राज॰)

इस अंक की सभी सामग्री प्रभावशाली है। शांतिधर्मी को पढ़कर वास्तव में मन को शांति मिलती है। मैं सबसे पहले शांतिप्रवाह पढ़ता हूँ। ईश्वर के स्वरूप को न समझने के कारण आज इतने अनर्थ हो रहे हैं, यदि दो ही बातें मनुष्य को समझ में आ जाएँ कि परमेश्वर सर्वव्यापक है उससे छुपकर कोई काम नहीं किया जा सकता तथा कर्मों के फल से कभी भी बचा नहीं जा सकता-- तो धरती पर से सारे पाप ही समाप्त हो जाएँ। ईश्वर भक्त के आचरण और व्यवहार में ईश्वरीय प्रभाव न आया, उसने सत्य और न्याय का आचरण न किया तो इसका अर्थ है कि अभी उसकी भक्ति में कमी है।

राजकुमार सैनी,
पुनीत वस्त्रालय, मेन बाजार, फीरोजाबाद (उ॰ प्र॰)

जीवन यात्रा

❑नरेन्द्र आहूजा **'विवेक'** ५०२ जी एच २७, सैक्टर २० पंचकूला

हम किसी भी छोटी सी यात्रा पर निकलते हैं तो उसके लिए पहले पूरी योजना बनाते हैं- कहाँ से कहाँ तक किस वाहन से यात्रा करनी है, उसका पूर्व आरक्षण फिर समय से पूर्व पहुंचकर अपनी सुरक्षित सीट पर जाकर बैठना, रास्ते में आवश्यकतानुसार सारा सामान, भोजन वस्त्रादि की पूर्व व्यवस्था करके चलते हैं। फिर जहां जाना है वहाँ रहने, भोजन आदि की पूर्व व्यवस्था आरक्षित करके चलते हैं। यह सारी तैयारी हम यात्रा की सफलता और लक्ष्य की प्राप्ति के उद्देश्य से करते हैं।

परन्तु कितनी आश्चर्यजनक बात है कि अपनी रोजमर्रा की इन छोटी-छोटी यात्राओं की इतनी तैयारी और मनुष्य जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण जीवन यात्रा के प्रति पूरी उदासीनता! छोटी सी यात्रा का लक्ष्य, मार्ग, मार्ग के वाहनों, भोजन, वस्त्र आदि की पूर्व व्यवस्था आरक्षण आदि ताकि कोई कष्ट न हो, लेकिन अपनी जीवन-यात्रा के लक्ष्य का निर्धारण शायद ही हममें से किसी ने किया हो। अपने पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत ईश्वर प्रदत्त अनमोल मनुष्य जीवन पाकर भी हम इसका उपयोग सही प्रकार से नहीं कर पा रहे हैं।

शरीर रूपी साधन का उपयोग हमें अपने लक्ष्य अर्थात् जन्म जाल के बंधनों से छूट कर मोक्ष की प्राप्ति के लिए करना चाहिए। परन्तु हम अबोध शायद अपने अस्तित्व से भी अनभिज्ञ-- इन साधनों अर्थात् मानव तन में उपलब्ध मन, बुद्धि, ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों को अपने आधीन रखने के स्थान पर शायद भौतिक, शारीरिक सुख सुविधाओं की चकाचौंध में सम्मोहित इन साधनों के आधीन होकर अपना मानव जीवन व्यर्थ गंवा रहे हैं।

हमारी स्थिति शराब पीकर अपनी सुध बुध खोकर वाहन चला रहे चालक की भाँति है जो गति के रोमांच के वशीभूत उस वाहन को अपने आधीन रखने के स्थान पर वाहन आधीन होकर दुर्घटना कर बैठता है और इस गति के रोमांच में जीवन समाप्त कर लेता है। इसी प्रकार हम भी इस तथाकथित विकास के नाम पर भौतिक सुख सुविधाओं को इकट्ठा करने की अंतहीन सी चाह में मन के वश में आकर अपने लक्ष्य से भटक कर बड़ी तीव्र गति से जीवन यात्रा कर रहे हैं। ईश्वर ने यह अनमोल मानव तन हमारे उपयोग के लिए दिया था परन्तु हम इसके ठीक विपरीत इसका उपयोग अपने जीवन के लक्ष्य अर्थात् मोक्ष प्राप्ति के लिये न करके अपने विनाश की ओर तीव्र गति से अग्रसर हैं।

हम कैसे अबोध हैं कि हम अपनी इतनी महत्त्वपूर्ण जीवनयात्रा में लक्ष्य के विपरीत दिशा में दौड़े चले जा रहे हैं। शायद हमें अपने लक्ष्य का कोई ज्ञान नहीं और यही अज्ञानता, अबोधता हमारे दु:खों का कारण है। छोटी सी बस यात्रा करते समय तो पूरी तैयारी, लक्ष्य का निर्धारण, पूर्व आरक्षण, रास्ते की वस्त्र भोजनादि की व्यवस्था-- परन्तु जीवन यात्रा में साधनों को आधीन रखने के स्थान पर साधनों के आधीन होकर झूठे विकास की चकाचौंध से सम्मोहित विनाश की गहरी खाइयों की ओर बड़ी तीव्र गति से दौड़ रहे हैं। इस अंधी दौड़ में कहीं पीछे न छूट जायें, इसलिए कहीं रुककर अपनी दिशा और दशा पर चिंतन करने की भी कोई संभावना प्रतीत नहीं होती।

अब यह प्रश्न उठता है कि हमारी जीवन यात्रा का लक्ष्य क्या हो? उस लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग क्या हो, उस मार्ग पर हम कैसे चलें और लक्ष्य को प्राप्त करें? मनुष्य की जीवन यात्रा का लक्ष्य बिल्कुल साफ स्पष्ट मोक्ष की प्राप्ति है, जिससे हम अर्थात् जीवात्मा आनंदस्वरूप परमात्मा के परम आनंद में अपनी आत्मा को मग्न कर सकें और जन्म जाल अर्थात् जन्म मरण के चक्कर से मुक्ति पा सकें।

अब प्रश्न है कि इस उद्देश्य की प्राप्ति का साधन क्या हो? तो ईश्वर प्रदत्त यह अनमोल मानव शरीर, मन, बुद्धि, ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां इस लक्ष्य प्राप्ति का साधन हैं और हमें इन साधनों को, विशेष रूप से अत्यंत चंचल, सर्वाधिक गतिशील मन को अपनी नियंत्रण में रखकर ईश्वरप्राप्ति अर्थात् उसकी स्तुति, प्रार्थना, उपासना में लगाना है। अब जब लक्ष्य और साधन स्पष्ट हैं तो लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग क्या हो?

तो यह मार्ग है अपने साधनों को अपने नियंत्रण में रखकर आत्मा की उन्नति के लिए सद्कर्म, परोपकार के यज्ञीय कार्य करते हुए अपने जीवन को यज्ञमय बना लेना। और निश्चित रूप से ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में अंततः हमें हमारे सद्कर्मों, निष्काम भाव से किए गए परोपकार के यज्ञीय कार्यों का फल हमारे लक्ष्य प्राप्ति में सहायक सिद्ध होता है। हम सब अपनी जीवन यात्रा के लक्ष्य को पहचानें और उसकी प्राप्ति का प्रयास करें।

व्यापक सोम

□पं० चमूपति जी

असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया।
शुक्रासो वीरयाशवः।।६।।

ऋषि :—कश्यपः—द्रष्टा।

(शुक्रासः) शुद्ध (सोमासः) संजीवन-रस का संचार करने वाले (अश्वया) व्यापक (वीरया) वीर-रस सम्पन्न (गव्या) वाणी द्वारा (वाजिनः) शक्तिशाली होकर (आशवः प्र-असृक्षत) व्यापक प्रभाव वाले हो गये।

संत अपनी संजीवनी का प्रभाव अपने तक ही परिमित नहीं रखता। उसका सम्बन्ध संजीवन के स्रोत से हो गया है। उसकी अपनी सम्पूर्ण सत्ता रसमय है, पवित्र है, तेज से, शक्ति से सम्पन्न है। उसने स्फूर्ति के मूल स्रोत से विशेष स्फूर्ति प्राप्त की है। उसके लिए स्वार्थी होना असंभव है। वह अपनी स्फूर्ति औरों को दिये बिना नहीं रह सकता।

उसकी वाणी में जादू है। उसकी सत्ता के विस्तार का साधन उसका उदार क्रियात्मक उपदेश है। उसकी पवित्रता छः फीट के शरीर में सीमित कैसे रह सकती है? उसके प्रवचन में व्यापकता का गुण है। विघ्न-बाधाओं को छिन्न-भिन्न करता हुआ वह चारों दिशाओं में फैल रहा है। संत के प्रभाव का क्षेत्र दिनों-दिन बढ़ता ही जाता है। वास्तविक वीरता उसी की है। अपनी वाणी के प्रहार से वह सब दुर्गुणों को जीतता जाता है। कोई संकोच, कोई कृपणता उसके उपदेश के आगे ठहर नहीं सकती। शुद्ध लोक-हित की भावना से किया गया उपदेश द्वेष का-वैर भाव का झट नाश कर देता है। शत्रुओं तक को मित्र बना लेता है। साईं लोगों की महिमा को कोई क्या कहे। ज्यों-ज्यों समय बीतता है, त्यों-त्यों उनकी आध्यात्मिक संजीवनी का संचार अधिक तेज, अधिक व्यापक होता जाता है। प्रभु के प्यारे, सम्पूर्ण प्रजा के प्यारे बन जाते हैं, यहाँ तक कि सारा विश्व उन्हीं के रंगों में रंग कर उनका अनुरक्त सा हो जाता है। विचारक उनके विचार के अनुकूल ही विचार करने लगते हैं। प्रचारक उनके प्रचार के अनुसार ही प्रचार करते हैं। ऐसे ही लोगों को नवयुग का कर्ता, नये विश्व का प्रवर्तक कहा जाता है।

यही लोग 'शुक्र' हैं, 'बाजी' हैं, 'आशु सोम' हैं। प्रभो! क्या हम भी ऐसे 'सोम' नहीं हो सकते? हमें अपने वाज से वाजी, अपनी शक्ति से शुक्र, अपने सवन से सोम बनाओ। यह नहीं तो इन सोमों का अनुरक्त ही सही। हम उनके रंग में रंग जायें।

चाणक्य-नीति

चतुर्थोऽध्यायः (गतांक से आगे)

सा भार्या या शुचिर्दक्षा सा भार्या या पतिव्रता।
सा भार्या या पतिप्रीता सा भार्या सत्यवादिनी।।१३

वही भार्या वास्तव में श्रेष्ठ होती है जिसमें ये पांच प्रकार के गुण होते हैं- १-मन, वचन, कर्म से शुद्धि, २-घर के सभी कार्यों में निपुण, ३-पति के व्रत का पालन करने वाली, ४- शिष्ट व्यवहार से सभी के प्रेम व सत्कार की पात्र, ५-सदा सत्य व्यवहार करने वाली।

अपुत्रस्य गृहं शून्यं दिशः शून्यास्त्वबान्धवा।
मूर्खस्य हृदयं शून्यं सर्व शून्या दरिद्रता।।१४।।

बिना पुत्र के घर शून्य होता है। भाईचारे के बिना सभी ओर शून्यता होती है। मूर्ख का हृदय शून्य होता है। निर्धनता होने पर सारा संसार ही शून्य जैसा= निरर्थक सा होता है।

अनभ्यासे विषं शास्त्रमजीर्णे भोजनं विषम्।
दरिद्रस्य विषं गोष्ठी वृद्धस्य तरुणी विषम्।।१५

अभ्यास के बिना विद्या विष हो जाती है। अजीर्ण होने पर भोजन विष के समान हो जाता है। निर्धन व्यक्ति के लिए परिश्रम न करके गोष्ठी करना (बत्ते मारना) विष होता है। वृद्ध व्यक्ति के लिए युवती स्त्री विष होती है।

त्यजेद्धर्मं दयाहीनं विद्याहीनं गुरु त्यजेत्।
त्यजेत्क्रोधमुखीं भार्यां निःस्नेहान् बांधवाँस्त्यजेत्।

दयाविहीन धर्म को छोड़ देना चाहिए। विद्याहीन गुरु का त्याग कर देना चाहिए। असमय और अकारण क्रोध करने वाली स्त्रीं को छोड़ देना चाहिए। प्रेम रहित=शत्रुता करने वाले बंधुओं का त्याग कर देना चाहिए।

अध्वा जरा मनुष्याणां वाजिनां बंधनं जरा।
अमैथुनं जरा स्त्रीणां वस्त्राणामातपो जरा।।१७।।

अधिक यात्रा की थकान मनुष्य को, बंधन घोड़े को, अतृप्त कामनाएँ स्त्री को और धूप वस्त्रों को जल्दी ही क्षीण कर देती है।

अमृत वचनावली

प्रीतिशतकम्

❑डॉ॰ रामभक्त लांगायन आई ए एस (सेवानिवृत्त)

यथा विशिष्टतापेन जलं सुपरितप्यते।
वैराग्यं सर्वकर्माणि दग्ध्वा गमयतीश्वरम्।।६०।।

जैसे पानी १०० डिग्री पर उबलना शुरू कर देता है उसी प्रकार एक दिन विरसता की वह घड़ी आती है कि मनुष्य संसार के रस को छोड़कर प्रभु के रस में प्रवेश कर जाता है।

प्रेमपीड़ा वरं प्राप्ता न तु भोगाः सुखानि च।
तावान्भवति संशुद्धो यावान्पीड्येत पीडया।।६१।।

धन का सुख, दुःख से बदतर है। प्रेम से मिला दुःख भी धन के सुख से बेहतर है। जो जितना पीड़ा झेलेगा उतना प्रेम का पात्र बनता जाएगा और उतना ही शुद्ध होता चला जाएगा।

बहून् प्रहारान् सहते सौरूप्यावाप्यते शिला।
तपः क्लेशसहो नूनममन्दानन्दमृच्छति।।६२।।

जिस प्रकार पत्थर भी मूर्त्तिकार के हथौड़े सहकर बनी मूर्त्ति को देखकर खुश होता है, उसी प्रकार एक व्यक्ति जो त्याग तपस्या से अपने अन्तस् को संवारता है वह भी एक दिन आनन्द का अनुभव करता है।

मानवीयमिदम् पुष्पं रूपवर्णरसोज्जवलम्।
लब्ध्वा विकासहीनो यः स नरो ननु दोषभाक्।।६३

परमात्मा ने मनुष्य जैसा फूल न कभी पैदा किया और न करेगा। अगर वह न खिले तो इसमें किसका कसूर है? उसने तुम्हें पूरी सम्पदा दी है, अवसर दिया है। यदि इसका लाभ न उठा सके तो तुम्हारा ही दोष है परमात्मा का नहीं। (व्यक्ति अपनी अकर्मण्यता के कारण परमात्मा के आनन्द को प्राप्त नहीं कर पाता।)

कैसे सुरक्षित रहेगी नारी

राज कुकरेजा, 786/8 अर्बन एस्टेट करनाल–132001 raj.kukreja.om@gmail.com

नारी सुरक्षा का प्रश्न संसद में उठाया जा रहा है। टी. वी. चेनलों पर बड़ी बहस हो रही है, युवा वर्ग प्रदर्शन कर रहा है, चारों ओर अशांति का वातावरण बना हुआ है, लोग सहमे हुए और भयभीत हैं, अपनी-अपनी बेटियों की सुरक्षा को लेकर अत्यंत चिंतित हो रहेहैं, प्रतिदिन होने वाली बलात्कार की घटनाओं की सूचनाओं को समाचार पत्रों में पढ़कर व टी. वी. पर देखकर उनकी नींद उड़ रही है। बेटी बाहर से जब तक सुरक्षित घर नहीं आ जाती, उन की आँखें सामने की सड़क पर ही लगी रहती हैं। हर क्षण अनिष्ट की आशंका बनी रहती है।

पिछले दिनों राजधानी दिल्ली की गैंग रेप व पांच वर्ष की मासूम, अबोध बालिका के दरिंदगी का शिकार होने की घटनाओं के कारण, समाज के हरेक वर्ग का चिंतित होना स्वाभाविक है। ऐसा नही है कि ये घटनाएँ पहले नहीं होती थीं। होती तो तब भी थीं, लेकिन अनेक कारणों से दबी रहती थीं या फि र दबा दी जाती थीं। अब इसका श्रेय मीडिया को जाता है जो कम से कम इस क्षेत्र में तो महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जनता व प्रशासन जाग्रत हो रहे हैं। सरकार लोगों को आश्वासन पर आश्वासन दिए जा रही है कि कड़े से कड़े कानून बनाये जायेंगे और दोषियों को भी कड़ी से कड़ी सजा दी जायेगी, नारी की सुरक्षा के लिए सरकार चिंतित है।

माँ की कोख में भी नहीं सुरक्षित-

नारी का एक रूप नारी बनने से पूर्व कन्या का है। कन्या माँ की कोख में भी सुरक्षित नहीं है। बेटी न बाहर सुरक्षित है, न ही माँ के गर्भ में। बाहर तो बलात्कार परपुरुष करता है परन्तु यहाँ तो उसकी हत्या उसकी ममता की मूर्ति माँ ही करती है, कारण कई हो सकते हैं। घर के सदस्यों के दबाव को भी एक कारण माना जाता है, जो उसे इस निर्मम कर्म करने को विवश करता है, परन्तु इससे माँ अपने को निर्दोष सिद्ध नहीं कर सकती, यदि दबाव को कारण मान भी लिया जाए तो भी प्रश्न उठता है कि क्या वह विरोध और विद्रोह नहीं कर सकती? मुख्य अपराध तो माँ ही करती है। यह सब डाक्टरों की मिलीभगत से योजनाबद्ध होता है कि किसी को कानों कान खबर तक नहीं पड़ती।

नारी की शक्ति बेटी, बहू, सास के रूप में बिखरी पड़ी है। अपनी शक्ति को पूरी स्त्री जाति में समेटकर एक संगठन के रूप में आये। स्वजाति द्रोह छोड़कर माँ के रूप में बेटी को जन्म दे, बहू बनकर सास को सम्मान दे, सास बनकर बहू का स्वागत करे, समाज में फैली कुरीतियों को उखाड़ कर फेंक दे।

कन्या आखिर क्यों नहीं चाहिए?

इसके भी अनेक कारण हो सकते हैं। प्रथम तो लोग इस मिथ्या धारणा के शिकार हैं कि वंश बेटे से चलता है। इसपर जरा विचार करें कि क्या सचमुच वंश बेटे से चलता है? आज हमारे कितने बच्चे अपने दादा के पिता के नाम को जानते हैं? अपने पिता के नाम को भी इसलिए जानते हैं क्योंकि पाठशाला में प्रवेश करते समय बच्चे के पिता का नाम लिखना अनिवार्य होता है। वंश नाम से नहीं काम से चलता है। आज हम जिनको भी याद करते हैं, उनके काम के ही कारण याद करते हैं।

कन्या भ्रूण हत्या का एक कारण कन्या को आर्थिक बोझ समझना भी है। जैसे-जैसे मंहगाई बढ़ रही है लेन-देन, दहेज और प्रतिष्ठा-प्रदर्शन जोरों से बढ़ रहा है। समाज का एक वर्ग अधर्म से कमाकर अपनी तिजोरियां भर रहा है। उसके लिए विवाह आदि ऐसे अवसर हैं जहाँ वह दिल खोल कर धन लुटा सकता है और लुटा भी रहा है। सीमित आय वाला स्वयं को असहाय पाता है। पुरुष मानसिकता के कारण बेटे वाले स्वयं को अधिक भाव देतें हैं। बेटी पक्ष वालों से अपनी मनमानी मांगें व शर्तें मनवाने को अपना मौलिक अधिकार समझने लगे हैं। आजकल तो इन लोगों की अपेक्षाएं बढ़ती ही जा रही हैं। उन्हें बेटे के लिए लगी लगाई नौकरी वाली और जिस शहर में उनका राजदुलारा नौकरी करता है वहाँ की लड़की में रूचि होती है। विवाह गुण-कर्म-स्वभाव के अनुरूप न होकर एक व्यवसाय के रूप में परिवर्तित होते जा रहे हैं। इन कुरीतियों का सामना माता-पिता नहीं कर सकते। भीरु और डरपोक बनकर गर्भ

'आप मानवता में विश्वास मत खोइए, मानवता सागर की तरह है। अगर सागर की कुछ बूंदे गन्दी हैं तो सागर गंदा नहीं हो जाता।'

में पल रही कन्या की भ्रूण हत्या में ही भलाई समझकर एक बहुत बड़ा अपराध कर लेते हैं।

कन्या भ्रूण हत्या : जघन्य अपराध

कन्या भ्रूण हत्या एक बहुत बड़ा जघन्य अपराध है। यहाँ की अदालत में भले ही दंड से बच जाएँ परन्तु न्यायकारी ईश्वर की अदालत से नहीं बच सकते। समाज की यह बहुत बड़ी विडम्बना है कि एक ओर कन्या को देवी मान कर नवरात्रों में श्रद्धा के साथ उसके पग धोए जाते हैं, उसकी पूजा की जाती है तो दूसरी ओर गर्भ में ही कन्या रूपी कली को बड़ी ही निष्ठुरता के साथ कुचल दिया जाता है।

बेटे की चाहत का तीसरा कारण है कि बेटा वृद्धावस्था में उनको आश्रय देगा। बेटी तो विवाह के बाद पराये घर चली जाती है। प्रत्यक्ष प्रमाण है कि उनका यह भ्रम भी टूट चुका है। आजकल बेटे भी बहू को लेकर नौकरी के लिए किसी दूसरे शहर या विदेश जा रहे हैं। कई बच्चे अपने माता-पिता को इसलिए भी पास नहीं रख रहे क्योंकि वे आजाद रहना चाहते हैं और माता-पिता उनकी आजादी में बाधक बन सकते हैं। कई माता-पिता बेटे के पास इसलिए रह रहे हैं क्योंकि बहू नौकरी करती है, माता-पिता उनके बच्चों की देखभाल करते हैं।

यह सर्वविदित तथ्य है कि बेटी बेटे की अपेक्षा अधिक भावुक एवं संवेदनशील होती है। प्राय: देखा जा रहा है कि माँ-बाप बेटे-बहू से उपेक्षित हो रहे हैं, बेटी अपने घर उनका स्वागत कर रही है। यह उचित हो या अनुचित, परन्तु यह तो सिद्ध हो ही रहा है कि जिस बेटी के जन्म का स्वागत नहीं किया गया था, बस स्वीकार कर ली गई थी, माता-पिता के लिए कितने उदार हृदय वाली होती है।

घरेलू हिंसा की शिकार

समाज का एक वर्ग जो घरेलू हिंसा से पीड़ित है, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इस वर्ग में अधिकाँश महिलाएं श्रमजीवी हैं। दिनभर या तो मजदूरी करती हैं या दूसरों के घरों में काम करके जीवन निर्वाह करती हैं। पति जो कुछ यदि कमा भी लेता है तो उस से दारू पीता है, घर में मार पिटाई करता है और पत्नी की झोली में जिन बच्चों को डालता है, उनके पालन का दायित्व भी पत्नी के कन्धों पर होता है। इस वर्ग को सुरक्षा के साथ-साथ सहानुभूति की भी आवश्यकता है। इन्हें शिक्षा के साथ अपने अधिकारों के प्रति जाग्रत करना भी अत्यंत आवश्यक है।

अनुचित वक्तव्यों का करें विरोध

नारी को विकृत मानसिकता वाले राज नेताओं, संत-बाबों के विवादास्पद वक्तव्यों तथा इनकी टीका-टिप्पणी से भी सुरक्षा चाहिए, जो अपने वक्तव्यों द्वारा नारी को उस मध्यकाल में ले जाना चाहते हैं, जब नारी उपेक्षित तथा अपमानित जीवन जीने को विवश थी। उसे शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा गया, वेदों के पढ़ने का अधिकार नहीं दिया गया तथा उसे ताड़न का अधिकारी माना गया। तब देश पर मुगलों का राज था। परिस्थितियाँ अलग थीं, पर अब देश आजाद है। इन्हें इस प्रकार के वक्तव्य नहीं देने चाहिएँ। यदि देते हैं तो हम सबको एक स्वर में कड़ा विरोध करना चाहिए।

ऋषि दयानन्द सरस्वती का विशेष योगदान

ऋषि दयानन्द सरस्वती जी ने न केवल 'वेदों की ओर लौटो' का उद्घोष दिया अपितु नारी को वेद पढ़ने का अधिकारी भी बनाया। आज के युग में नारी को समानाधिकार मिल रहे हैं। उसे लिंग, जाति व सम्प्रदाय विशेष के आधार पर अधिकारों से वंचित नहीं किया जा सकता। इस सब में ऋषि दयानन्द जी का विशेष योगदान है, जिसके लिए सारी नारी जाति ऋषि दयानन्द सरस्वती जी की ऋणी रहेगी।

स्वयं कटिबद्ध हो नारी

सरकार के कड़े कानून क्या सुरक्षा दे पायेंगे? यह संदेहास्पद है। पोलिस भी भ्रष्ट सरकार के हाथों बिकी हुई है। सरकार ही नहीं चाहती कि अपराध की सभी शिकायतें दर्ज की जाएँ। इससे अपराध की बढ़ती दर सबके सामने उजागर हो जायगी तो सरकार की छवि खराब होगी और इस खराब छवि को लेकर अगले चुनाव में जनता के सामने क्या मुंह लेकर जायेगी? प्रश्न उठता है कि क्या नारी असुरक्षित भावना से ही जीती रहे? नारी को स्वयं अपनी सुरक्षा के लिए कटिबद्ध होना पड़ेगा। नारी की शक्ति बेटी, बहू, सास के रूप में बिखरी पड़ी है। अपनी शक्ति को पूरी स्त्री जाति में समेटकर एक संगठन के रूप में आये। स्वजाति द्रोह छोड़कर माँ के रूप में बेटी को जन्म दे, बहू बनकर सास को सम्मान दे, सास बनकर बहू का स्वागत करे, समाज में फैली कुरीतियों को उखाड़ कर फेंक दे। किसी ने बड़ा सुंदर कहा है 'जिस प्रकार मणियों का मूल्य पृथक् रहने पर कम होता है, माला के रूप में उनका मूल्य बढ़ जाता है, इसी प्रकार जाति जब एक होती है तो उसका विशेष आदर व महत्व होता है, परन्तु उसी जाति का पृथक्-पृथक् टुकड़ा

वह सम्मान तथा मूल्य नहीं पा सकता।' मेरा अपनी बहनों से कर जोड़ अनुरोध है कि अब सुंदर काण्ड की पंक्तियाँ 'ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी' का पाठ करना छोड़ दें। जब तुलसीदास जी ने इन्हें लिखा था तब सामाजिक परिस्थितियां भिन्न थीं अब भिन्न हैं। अब सर्व शिक्षा के अभियान चलाए जा रहे हैं, जिनमें शिक्षा का मौलिक अधिकार समाज के हरेक वर्ग के लिए है।

बच्चों को अच्छे संस्कार दें-

अपने भजन-कीर्तन में एक भजन बोलती हैं 'घर-घर रावण बैठा, इतने राम कहाँ से लाऊं' रावण भी हमने पैदा किये हैं और अब राम भी हम ने पैदा करने हैं। माता-पिता व आचार्य उन्हें सुसंस्कार नहीं दे रहे, दूसरी ओर दूरदर्शन जो आजकल हर परिवार का एक अभिन्न अंग बना हुआ है, उस पर दिखाए जा रहे निम्नस्तर के कार्यक्रम और अश्लील फिल्में बच्चों को वास्तविकता से भटका रही हैं। हम दोष बच्चों को दे रहे हैं कि बच्चे चरित्रहीन हो रहे हैं। अपने बच्चों को सुसंस्कार देकर उन्हें राम बनाना कोई मुश्किल काम नहीं है। इसके लिए अपने बच्चों को माता-पिता घर में व अध्यापक वर्ग विद्यालयों-महाविद्यालयों में नैतिक मूल्यों की शिक्षा दें। बच्चों के चरित्र-निर्माण पर विशेष ध्यान दें। शास्त्रों में कहा गया है- 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत्' इसका अर्थ है कि जिस व्यवहार को चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ न करें, वह व्यवहार दूसरों के साथ न करो। यह नैतिक शिक्षा की अंतिम कसौटी है।

एकजुट होकर दबाव बनायें

माताएँ असामाजिक घटनाओं को समाचार पत्रों में पढ़ती हैं, दूरदर्शन पर देखती हैं और लोगों से भी सुनती हैं- तो सहम सी गई हैं। किसी भी अनिष्ट की आशंका से बच्चों को बाहर खेलने नहीं भेजती। बच्चे घर की चारदिवारी में इंटरनेट और टी.वी. से चिपके रहते हैं। विज्ञापन जगत् अश्लील विज्ञापनों द्वारा मनुष्य की वासनाओं और भावनाओं को भड़काने का काम करता है, दूसरी ओर दूरदर्शन पर दिखाई जाने वाली फिल्में और निम्नस्तर के धारावाहिक बाल बुद्धि को भ्रमित करते हैं। बच्चे नायक-नायिका से इतने प्रभावित हो जाते हैं कि मन ही मन उन्हें आदर्श मान कर उनका अनुकरण करने लगते हैं। वैसे फैशन, वैसी ही अर्धनग्न वेशभूषा पहनना उन्हें अच्छा लगता है। फिल्मों में दिखाए जाने वाली हिंसा, अश्लीलता, क्रूरता व बर्बरता के दृश्य बालकों के कोमल चित्त पर कुसंस्कारों की छाप छोड़ते हैं, परिणामस्वरूप यही बच्चे बड़े होकर भंयकर अपराध करने लगते हैं। अतः हम सभी लोग मिलकर सरकार पर अपना रोष प्रकट करें कि वह टी.वी. व फिल्मों पर अंकुश लगाये। सरकार पर एकजुट होकर दबाव बनायें। जैसे दिल्ली गैंगरेप पर युवाशक्ति ने सडकों पर उतरकर रोष प्रकट किया तो सरकार को सचेत होना पड़ा। आवश्यकता है सोई सरकार को जगाने की, जो जनहित का ध्यान कर सके।

पड़ोसियों से मेलजोल बढ़ाएँ

सुरक्षा की दृष्टि से यह अति आवश्यक है कि हम अपने आस-पास नजर रखें कि कहाँ क्या हो रहा है। यह भी एक विडम्बना है कि इंटरनेट से हम उन व्यक्तियों से तो सारे विश्व में जुड़ गये हैं, जिन्हें देखा नहीं व जानते नहीं पर पास रहने वाले पड़ोसी से परिचय तक नहीं। हम लोग स्वार्थी, संकीर्ण और संवेदना शून्य हो रहे हैं। आस-पास के लिए सतर्क नहीं रहते अपितु अपने-अपने घरों के बड़े-बड़े गेट लगवाकर स्वयं को किले में बंद कर लिया है। परिणाम हमारे सामने है कि चोर-उचक्के और दरिंदे बाहर स्वछन्द भाव से घूम रहे हैं। अपराधी निसंकोच अपराध पर अपराध किये जा रहे हैं।

निराश व हताश न हों

अब हम अर्थात् समाज का हर वर्ग, पोलिस और सरकार इस असुरक्षा की लड़ाई को मिलकर लड़ें। अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करें, सर्वप्रथम पोलिस अपनी भक्षक की छवि को सुधारे, जनता की रक्षक बनकर जनता का विश्वासपात्र बने, हर पीड़िता की रिपोर्ट दर्ज करे और यथासम्भव सहायता भी करे। सरकार जो कड़े से कड़े कानून बनाती है उनका पालन भी सख्ती से करे अर्थात् दोषियों को दंड देने में अपना ढ़ीला ढाला रवैया छोड़ दे। आम जनता का विश्वास सरकार और न्याय व्यवस्था से उठने लगता है, जब दोषियों को उनके दुष्कर्म का फल मिलते नहीं दिखता। दंड व्यवस्था बढ़ते अपराधों को कम कर सकती है। आम नागरिक भी सतर्क रहे। हम अपनी बच्चियों को जूडो और कराटे का भी प्रशिक्षण दिलवाएं ताकि कुछ तो अपनी रक्षा करने में सक्षम हो सकें। समाज पूरी तरह तो अपराधमुक्त न कभी हुआ है और न ही हो सकता है। अपराधों को काफी सीमा तक कम अवश्य किया जा सकता है। निराश व हताश न हों। जब कभी निराशा घेरने लगे, विश्वास डगमगाने लगे तो इन पंक्तियों को याद करते रहें- 'आप मानवता में विश्वास मत खोइए, मानवता सागर की तरह है। अगर सागर की कुछ बूंदे गन्दी हैं तो सागर गंदा नहीं हो जाता।'

अंत में ईश्वर से प्रार्थना है--धियो यो नः प्रचोदयात्

"उपेक्षित वरदान"

❒ रामफल सिंह आर्य, ८७/एस-३, बी एस एल कालोनी
सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि० प्र०)

विश्व विधाता के आशीर्वाद से आंगन में उतरी एक किरण।
दूध सी उजली फूल सी कोमल सूर्य चन्द्र से उसके नयन।।

रूई के गोले जैसी जब पिता की गोदी में आई।
देखा अपने जनक को उसने आँखें खोल वह मुस्काई।
मानो अपनी मूक वाणी से पिता का धन्यवाद किया।
फिर उसने पलकें झपका ली मानो प्रभु को याद किया।
लेकिन यह क्या उसे देखकर पिता की बढ़ गई थी उलझन।
दूध सी उजली फूल सी कोमल सूर्य चन्द्र से उसके नयन।।

मांगा तो कुछ और ही था किन्तु प्रभु ने क्या यह दान दिया।
सारी उम्र की उलझन दे दी कैसा यह वरदान दिया।
हाय दामाद की लाठी मेरे घर के अन्दर आन टिकी।
शर्म से मेरी गर्दन झुक गई आन बान और शान मिटी।
कैसा यह अवसर आया है पिता के भीग गये हैं नयन।
दूध सी उजली फूल सी कोमल सूर्य चन्द्र से उसके नयन।।

मानो पिता के भावों को कुछ-२ कन्या ने जान लिया।
कुनमुना कर रोने लग गई जैसे सब पहचान लिया।
नन्हें-२ गालों पर टप-टप कर आंसू बहने लगे।
अनचाहे इस अपने आगमन की गाथा यूं कहने लगे।
रोते-रोते हिचकी बंध गई कांप उठा नन्हा सा मन।।
दूध सी उजली फूल सी कोमल सूर्य चन्द्र से उसके नयन।।

मेरा इस आंगन में आना माना शुभ समाचार नहीं।
यह तो व्यवस्था विधाता की है मेरा कुछ अधिकार नहीं।
किस आंगन में खेलूं किसकी गोदी में बैठ इतराऊं मैं।
मेरे जन्म का कारण तुम हो फिर तुम्हीं कहो कहाँ जाऊं मैं।
कैसे उपेक्षा झेलूं तुम्हारी होकर तुम्हारे रक्त का कण।।
दूध सी उजली फूल सी कोमल सूर्य चन्द्र से उसके नयन।।

पिता शोकाकुल माता विवश है कहो ये बेटी जाये कहाँ।
कहाँ पर गूंजें ये किलकारी आंगन को महकाये कहाँ।
जननी पुरुष की होने पर भी कैसे दुत्कारी जाती।
जन्म लेने से पहले भी कुछ गर्भ में ही मारी जाती।
कहीं फैंक दी जाती कूड़े में गूंज रहा प्रतिदिन क्रन्दन।
दूध सी उजली फूल सी कोमल सूर्य चन्द्र से उसके नयन।।

पैसे देकर आज की माता गर्भपात करवाती हैं।
सन्तान के छोटे-२ टुकड़े गन्दी नाली में बहाती हैं।
अनाथ कहीं पर फैंक दी जाती बिलख-२ दम तोड़ रही।
कहीं टोलियां कुत्तों की फिर उनको हैं झिंझोड़ रही।
सभ्यता के आवरण में आदमी हैवान बना हो गया नगन।
दूध सी उजली फूल सी कोमल सूर्य चन्द्र से उसके नयन।।

कन्या का अधिकार न छीनो मत उसका अपमान करो।
मातृ शक्ति है यह तो इसका यथोचित सम्मान करो।
दुर्गा लक्ष्मी सरस्वती की ओ! पूजा करने वालो।
अपने घर में साक्षात् जीवित देवी को भी पालो।।
स्वर्ग बना देगी घर को ये श्रद्धा से तुम करो नमन।।
दूध सी उजली फूल सी कोमल सूर्य चन्द्र से उसके नयन।।

पूजा जहाँ नारी की होती वहीं पर स्वर्ग बताया है।
करते निवास हैं वहीं देवता ऋषियों ने समझाया है।।
माता पिता और भाईयों पर हैं अपनी खुशियां देती वार।
वरदान अनुपम हैं दाता का सिर झुकाओ करो स्वीकार।।
बड़े सहज में पिता और पति के कुल को देती हैं बंधन।
दूध सी उजली फूल सी कोमल सूर्य चन्द्र से उसके नयन।।

मन वचन कर्म से पवित्र ही चरित्रवान है!

❑डॉ० जगदीश गांधी, संस्थापक-प्रबन्धक, सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

व्यक्तित्त्व का विकास चरित्र से होता है और चरित्र से ही मनुष्य भी पहचान होती है। चरित्र-निर्माण में श्रेष्ठ चिंतन का जहाँ अपना महत्व है, वहीं श्रेष्ठ आचरण इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। जहाँ चरित्र आचरण का निर्धारण करता है, वहीं श्रेष्ठ आचरण द्वारा चरित्र का गठन होता है।

संसार में जो लोग उन्नति के शिखर पर पहुँचे वे अपने मन, वचन और कर्म से अत्यन्त ही पवित्र और महान थे। किसी ने सही कहा है कि 'जो मन, वचन, कर्म से पवित्र है, वह चरित्रवान ही यहाँ महान है।' साधारण लोग भी विपरीत परिस्थितियों में भी अपने मन, वचन और कर्म से पवित्र होने के कारण असाधारण कार्य करके संसार में सदैव के लिए अमर हो गये।

विचार ही कर्म की प्रेरणा शक्ति है:-

मानव मस्तिष्क में जन्म लेने वाले विचार ही कर्म की प्रेरणा शक्ति हैं। विचार ही मनुष्य को ऊपर उठाते हैं और विचार ही मनुष्य के पतन का भी कारण बनते हैं। वास्तव में हमारे विचारों से ही हमारी कर्म की पृष्ठभूमि तैयार होती है। इस प्रकार व्यक्ति के जैसे विचार होते हैं, वैसे ही उसके कर्म होते हैं और फिर वह वैसा बन भी जाता है। गीता में कहा गया है कि

विचारा हि मनुष्याणां प्रतिमानाः परन्तपः।
विचारो यादृशो यस्य मर्त्यो भवति तादृशः।।

अर्थात् विचार ही मनुष्य के प्रतिनिधि हैं। जिस मनुष्य के जैसे विचार हैं, वैसा ही वह बन जाता है। इसलिए हमारे विचार जितने ही अच्छे और उच्च होंगे, कर्म उतने ही श्रेष्ठ होंगे। गीता में ही कर्म के बारे में कहा गया है कि 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' अर्थात् कर्म करना ही तेरा अधिकार है, फल की चिंता मत कर।

व्यक्ति जन्म से नहीं बल्कि कर्म से श्रेष्ठ होता है-

गोस्वामी तुलसीदास ने भी विश्व को कर्म प्रधान बताते हुए कहा है कि

कर्म प्रधान बिस्व कर राखा,
जो जस करहि सो तस फल चाखा।

अर्थात् जो व्यक्ति जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल उसको मिलेगा। श्रेष्ठ ऋषि पुत्र होने के नाते रावण सबके लिए पूज्य हो सकता था किन्तु अपने दुराचार तथा नारी के अपमान का दोषी होने के कारण वह लोकनिंदा का ही नहीं अपितु मृत्यु का भी भागीदार हुआ। जबकि सामान्य कुल में जन्म लेने वाले भगवान श्रीकृष्ण को उनके चरित्र के कारण ही उनके जीते जी ही उनको सर्वाधिक सम्मानित माना गया। इसी प्रकार राजा का पुत्र होने पर भी दुर्योधन को अपने चरित्र के कारण अपयश एवं मौत मिली। भगवान बुद्ध के अनुसार व्यक्ति जन्म से नहीं बल्कि कर्म से श्रेष्ठ होता है। भगवान महावीर ने भी कर्म की शुद्धि को सर्वाधिक महत्त्व दिया है। किसी ने सही ही कहा है कि-

सभी कामना छोड़कर करता चल तू कर्म।
यही लोक-परलोक है, यही धर्म का मर्म।।

मनुष्य अपना भाग्य अपने कर्म से लिखता है:-

तुलसीदास जी ने कहा है कि -''सकल पदारथ हैं जग माहीं, कर्महीन नर पावत नाहीं।' अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन को जब कोई भी नौकरी नहीं मिली तो उन्होंने जूतों पर पालिश करके एवं अखबार बेचकर व रद्दी की दुकान पर नौकरी करके ईमानदारी से अपनी आजीविका कमाई और अपनी आत्मा को विकसित किया। ईमानदारी और अति कठोर परिश्रम से अपनी आजीविका कमाते हुए समाज सेवा के अति महत्वपूर्ण कार्य करके अमेरिका जैसे बड़े देश के राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए और गुलामी प्रथा को समूल नष्ट किया, अमेरिका से काले-गोरे व्यक्तियों के भेदभाव को समाप्त किया और जनतन्त्र स्थापित किया।

जो भी कार्य करें उसे आत्मा से जुड़कर करें:-

गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं-''योगस्थः कुरु कर्माणि, संगम् त्यक्वा धनंजय'। अर्थात् संसार में जो भी कार्य करें उसे आत्मा से जुड़कर करें। दो शब्द बहुत ही करीब अर्थ वाले हैं। संग और योगस्थ। लेकिन दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है। संग का अर्थ है कि साथ-साथ तथा

योग का अर्थ है मिल जाना। नाला नदी के साथ-साथ वर्षों बहता है। लेकिन उसका जल कभी भी नदी के जल के समान पवित्र नहीं हो सकता जबकि नदी में मिल जाने के उपरान्त नदी ही उस नाले के गन्दे जल को अपने में समेट कर उसे साफ करती है।

आत्मशुद्धि आवश्यक हैः-

चेतना की शुद्धता को संत कबीर अपनी वाणी में व्यक्त करते हुए कहते हैं -'लागा चुन्दरी में दाग छुड़ाऊँ कैसे, पी के घर जाऊँ कैसे' चुन्दरी पाँच तत्त्वों से बनी काया है और दाग है- अपने कर्म-संस्कारों का। यदि पिया (प्रभु) से मिलना है, ब्रह्म के दर्शन करना चाहते हैं तो हमें दूषित चेतना रूपी चुन्दरी के समस्त दाग को साफ करना होगा और यह संभव है प्रभु द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर, क्योंकि संस्कारों की अशुद्धि को लेकर हम परमात्मा की कृपा के पात्र नहीं बन सकते।

चरित्र मनुष्य की सबसे बड़ी पूंजी हैः-

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्त्व का विकास चरित्र से होता है और चरित्र से ही मनुष्य भी पहचान होती है। चरित्र-निर्माण में श्रेष्ठ चिंतन का जहाँ अपना महत्व है, वहीं श्रेष्ठ आचरण इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। जहाँ चरित्र आचरण का निर्धारण करता है, वहीं श्रेष्ठ आचरण द्वारा चरित्र का गठन होता है। किसी ने सही ही कहा है कि 'धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो थोड़ा सा गया किन्तु अगर चरित्र गया तो सब कुछ ही चला गया।' चीनी दार्शनिक कन्फुशियस ने कहा है- 'जो इंसान सच्चा नहीं है, वह न तो अधिक देर तक गरीबी को झेल सकता है और न ही अमीरी को संभाल सकता है, क्योंकि चरित्र के अभाव में गरीबी उसे निष्ठुर बना देती है और अमीरी बर्बर।' इस प्रकार संसार में जितने भी महापुरुष हुए, उनकी महानता का आधार उनका अपना चरित्र ही था। सभी महापुरुषों ने अपने चरित्र को मन, वचन और कर्म के द्वारा महान बनाया था। वास्तव में किसी भी मनुष्य के जीवन में उसका चरित्र ही उसे उत्थान या पतन की ओर ले जाता है।

प्राण जाय पर वचन न जाईः-

रामचन्द्र जी अपने पिता द्वारा माता कैकेयी को दिये गये दो वचनों के पालन हेतु १४ वर्षों के लिए अपनी पत्नी सीता व भाई लक्ष्मण के साथ वन को चले गये तथा भरत के लिए अयोध्या की राजगद्दी छोड़ दी, साथ ही इस प्रकार उन्होंने समाज में अपने पिता राजा दशरथ द्वारा माता कैकेयी को दिये गये दो वचनों का पालन करके समाज को वचन पालन की शिक्षा दी।

वास्तव में जब हमारे मन, वचन और कर्म पवित्र होंगे तभी हमारा चरित्र भी पवित्र एवं महान बनेगा। इसलिए हमें सारे संसार के महापुरुषों से अपने मन, वचन और कर्म को पवित्र बनाने की प्रेरणा लेते हुए अपने बच्चों को भी महान बनने की प्रेरणा देनी चाहिए।

साधारण व्यवसायी 'रैदास' संत रैदास बन गयेः-

संत रैदास कभी मंदिर-मस्जिद गिरजे-गुरुद्वारे नहीं जाते थे। रैदास जूते बनाकर अपनी आजीविका चलाने वाले एक व्यवसायी थे। पूरे मनोयोग एवं अति परिश्रम से जूते बनाते समय उनकी भावना यह रहती थी कि जो भी उनका जूता खरीदे, उसे जूता पहनकर किसी भी प्रकार की तकलीफ न हो तथा जूता आरामदेय हो। साथ ही उनका बनाया जूता टिकाऊ हो ताकि ग्राहक को बार-बार पैसा न खर्च करना पड़े। रैदास जूता में आयी लागत में अपना उचित लाभ जोड़कर उसे एक दाम में बेचा करते थे। उनकी इस पवित्र भावना के कारण ही भगवान की कृपा से उन्हें संत रैदास की उपाधि मिली।

डॉ० राधाकृष्णन ने पने मन, वचन और कर्म के द्वारा अपनी आत्मा का विकास किया :-

राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन एक शिक्षक की नौकरी करके अपनी आजीविका कमाते थे। उन्होंने एक आदर्श शिक्षक का आचरण करते हुए अपनी आत्मा का विकास किया। वे पूरे मनोयोग से बहुत दिल लगाकर अपने विषय को विद्याथियों को पढ़ाते थे तथा विषय की अच्छी पढ़ाई के साथ ही साथ विद्यार्थियों को आध्यात्मिक शिक्षा भी देते थे। इस कारण वे अपने विद्यार्थियों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय शिक्षक बन गये। उन्होंने अपनी नौकरी के द्वारा ही अपनी आत्मा का विकास किया।

हम भी अपने मन, वचन और कर्म के द्वारा दुनिया सुन्दर और सुरक्षित बनायेंः-

हमें परमपिता परमात्मा से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे प्रभु, हमें वह शक्ति दे कि हम एक शुद्ध, दयालु एवं ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित हृदय धारण करते हुए अपने मन, वचन और कर्म से सारी दुनिया का सुन्दर और सुरक्षित भविष्य बना सकें। वास्तव में जब हमारे मन, वचन और कर्म पवित्र होंगे तभी हमारा चरित्र भी पवित्र एवं महान बनेगा। इसलिए हमें सारे संसार के महापुरुषों से अपने मन, वचन और कर्म को पवित्र बनाने की प्रेरणा लेते हुए अपने बच्चों को भी महान बनने की प्रेरणा देनी चाहिए।

बढ़ते स्वार्थ से पतले होते रिश्ते

❑प्रो॰ शामलाल कौशल मकान नं॰ ९७५ बी/ २०, ग्रीन रोड रोहतक-१२४००१

इन्सान पैसा कमाने का रोबोट और बच्चा पढ़ने की मशीन बनकर रह गया है। संयुक्त परिवार की प्रथा के विघटन से सामाजिक ढांचा चरमरा चुका है।

खून पानी से गाढ़ा होता है, अतः खून के संबंध को सबसे बड़ा व सात्विक माना जाता है, सभी अन्य संबंध इसके अधीन माने जाते हैं। बढ़ती भौतिकता व स्वार्थ के चलते अब यह पौराणिक सत्य गलत होता जा रहा है और अब ये रिश्ते पतले होने लगे हैं, इन रिश्तों पर स्वार्थ प्रभावी होता देखा जा रहा है। रिश्तों में बढ़ती दूरी व मनभेद आम बातें बनते जा रहे हैं। अनुराग, अपनापन व सुकून से भरा परिवारिक माहौल लुप्त होता जा रहा है। आधुनिकता की भूलभुलैया, पाश्चात्य सभ्यता की मृगमरीचिका व धनार्जन की लिप्सा आपकी संबंधों पर हावी हो गये हैं, जिसके चलते अपनापन अतीत की अमराईयों में खो गया है। आज के इंसान को प्रियजनों की उतनी जरुरत नहीं रह गयी है। कहीं कहीं तो बाप बेटे व मां बेटे में न्यायिक जंग देखी जा सकती है। संवेदना घटती जा रही हैं। बड़े बुजुर्गों के प्रति सम्मान घटता जा रहा है। निश्छल प्रेम घटता जा रहा है। हर संबंध स्वार्थ के तराजू पर तोला जाता है। आधुनिक जीवन की व्यवस्ताएं तथा फास्ट लाईफ स्टाईल संबंधों में विषाद उत्पन्न कर रहे हैं। आज प्यार के दो बोल बोलना बेमानी सा लगता है।

टी॰ वी॰ व मोबाईल संस्कृति ने आज के इंसान की जीवन शैली को पूर्णतः बदल दिया है जिसके चलते न तो स्वाध्याय का समय मिल पाता है और न ही आत्मावलोकन का। परिवार के साथ समय बिताना भी दुर्लभ हो गया है। परिवार एक न्युक्लियर फॅमिली बन कर रह गया है जिसमें विषाद बढ़ा है, जिसने आत्महत्याओं को प्रोत्साहित किया है। पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण से वहाँ व्याप्त कई कुसंगतियां (लीव ईन) आदि यहाँ भी पनपने लगी हैं। न्युक्लियर फॅमिली से उत्पन्न अकेलापन डिप्रेशन को बढ़ावा दे रहा है। धर्म से विमुखता प्राकृतिक वैषम्यता को जन्म देती है जिससे मनुष्य की प्रवृत्ति में नकारात्मता बढ़ती है। तम की प्रबलता गलत कार्य की ओर प्रेरित करती है।

इन्सान पैसा कमाने का रोबोट और बच्चा पढ़ने की मशीन बनकर रह गया है। संयुक्त परिवार की प्रथा के विघटन से सामाजिक ढांचा चरमरा चुका है आज मां की लोरियों व दादा-दादी की कहानियों को सुनकर बच्चा बड़ा नहीं होता बल्कि फिल्मों के अश्लील नृत्य और हिंसक दृश्य देखकर बड़ा होता है। उच्च शिक्षा तथा आईकॉन बनने के चक्कर में बच्चों का बचपन लुटता जा रहा है जिसके चलते कई वयस्क बिमारियां बचपन में ही लग जाती हैं और उनकी शेष जिंदगी नरक बन जाती है। बच्चे व बच्चियां जल्दी वयस्क बनने लग गये हैं, जो वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय बन गया है।

जरूरत है हम वास्तविकता को समझें और यथार्थ व सार्थक जीवन शैली अपनायें। रुपये पैसे में क्रयशक्ति है अतः भौतिक पदार्थों की हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति में जरुरी है, लेकिन वह लक्ष्य नहीं बन सकते। भौतिक पदार्थों की आसक्ति प्रकृति के नियमों पर हावी नहीं बन सकती। जीवन में अनुराग, प्रेम, मान, सम्मान, अपनेपन की अहम भूमिका है, जो मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाते हैं।

अतः आईये हम पुनः अपनी ढाई अक्षर प्रेम की शैली में जियें और स्वार्थ से ऊपर उठकर मानवीय जीवन जीने का प्रयास करें व उच्च मनोवृत्ति अपनायें। भौतिक पदार्थों के आकर्षण क्षणभंगुर हैं, जो काल्पनिक सुख दे सकते हैं, जीवन का सबसे बड़ा सुख शांति नहीं। भौतिकता के प्रति जितना अधिक आकर्षण होगा, उतना ही नैतिक पतन होगा। अतः सादा जीवन, उच्च विचार की शैली अपनाकर सुकून भरी जिंदगी जीयें।

खुशियाँ चार प्रकार की हैं- शारीरिक, मानसिक (भावनात्मक) बौद्धिक व आध्यात्मिक। मानसिक शांति सर्वोत्तम मानी गयी है जो इमानदारी व सत्य व्यवहार से संभव है। शांति आत्मस्थ होती है अतः अन्तर्मुखी बनकर धर्म के वास्तविक स्वरुप को आत्मसात करें। धर्माचरण से ही सारी व्यवस्थाएं सुचारु रहती हैं।

चाणक्य ने लिखा है- सत्य से ही पृथ्वी स्थिर है, सत्य से ही वायु चलती है। सत्य से सूरज तपता है, सारा जगत भी सत्य के कारण टिका है। सत्य में स्थिरता है।

नीयत तुम्हारी अच्छी है तो किस्मत तुम्हारी दासी है।
कर्म तुम्हारे अच्छे हैं तो घर में मथुरा काशी है।

वीर मराठों का विजय अभियान

❑ डॉ० विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ drvivekarya@yahoo.com

अंग्रेज और उनके मानसिक गुलाम लेखकों द्वारा एक शताब्दी से भी अधिक के हिंदुओं के इस स्वर्णिम काल को पाठ्य पुस्तकों में न लिखा जाना इतिहास के साथ खिलवाड़ नहीं तो और क्या है?

भारतीय इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में औरंगजेब और शिवाजी के संघर्ष सहित चुनिन्दा घटनाओं को ही प्रमुखता से बताया जाता है जैसे- नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली द्वारा भारत पर आक्रमण, प्लासी की लड़ाई में सिराज-उद-दौलाह की हार और अंग्रेजों का बंगाल पर काबिज होना तथा मराठों का पानीपत के युद्ध में हार जाना। उसके पश्चात् टीपू सुल्तान की हार, सिखों के उदय और अस्त से 1857 के संघर्ष तक वर्णन मिलता है।

एक प्रश्न उठता है कि इतिहास के इस लंबे 100 वर्ष के कालखण्ड में भारत के असली शासक कौन थे? शक्तिहीन मुगल तो दिल्ली के नाममात्र के शासक थे। उस काल का अगर कोई असली शासक था, तो वे थे मराठे। शिवाजी महाराज द्वारा देश-धर्म और जाति की रक्षा के लिए जो अग्नि महाराष्ट्र से प्रज्वलित हुई थी उसकी ज्वालाएँ महाराष्ट्र के बाहर फैल कर देश की सीमाओं तक पहुँच गई थीं। इतिहास के सबसे रोचक इस स्वर्णिम सत्य को देखिये कि जिस मतान्ध औरंगजेब ने वीर शिवाजी महाराज को पहाड़ी चूहा कहा था उन्हीं शिवाजी के वंशजों को उसी औरंगजेब के वंशजों ने 'महाराजाधिराज' और 'वजीरे मुतालिक' के पदनाम से सुशोभित किया था। जिस सिंध नदी के तट पर आखिरी हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान के घोड़े पहुँचे थे उसी सिंध नदी पर कई शताब्दियों के बाद अगर भगवा ध्वज लेकर कोई पहुँचा तो वह मराठा घोड़ा था। सिंध के किनारों से लेकर मदुरै तक, कोंकण से लेकर बंगाल तक मराठा सरदार सभी प्रान्तों से चौथ के रूप में कर वसूल करते थे, स्थान स्थान पर अपने विरुद्ध उठ रहे विद्रोहों को दबाते थे, जंजीरा के सिद्दियों को हिन्दू मंदिरों को भ्रष्ट करने का दंड देते थे, पुर्तगालियों द्वारा हिन्दुओं को जबरदस्ती ईसाई बनाने पर उन्हें यथायोग्य दंड देते थे, अंग्रेज, जो अपने आपको अजेय और विश्वविजेता समझते थे, मराठे उनसे समुद्री व्यापार करने के लिए टैक्स लेते थे, मराठे देश में स्थान-स्थान पर हिन्दू तीर्थों और मन्दिरों का पुनरुद्धार करते थे, जिन्हें मुसलमानों ने नष्ट कर दिया था, जबरन मुसलमान बनाये गए हिन्दुओं को फिर से शुद्ध कर हिन्दू बनाते थे। मराठों के राज में सम्पूर्ण आर्यावर्त्त राष्ट्र में फिर से भगवा झंडा लहराता था और वेद, गौ और ब्राह्मण की रक्षा होती थी।

अंग्रेज और उनके मानसिक गुलाम साम्यवादी लेखकों द्वारा एक शताब्दी से भी अधिक के हिंदुओं के इस स्वर्णिम काल को पाठ्य पुस्तकों में न लिखा जाना इतिहास के साथ खिलवाड़ नहीं तो और क्या है? हम न भूलें कि 'जो राष्ट्र अपने प्राचीन गौरव को भुला देता है, वह अपनी राष्ट्रीयता के आधारस्तम्भ को खो देता है।'

उलटी गंगा बहा दी

वीर शिवाजी का जन्म 1627 में हुआ था। उनके काल में देश के हर भाग में मुसलमानों का ही राज्य था। यदा कदा कोई हिन्दू राजा संघर्ष करता तो उसकी हार, उसी की कौम के किसी विश्वासघाती के कारण हो जाती, हिन्दू मंदिरों को भ्रष्ट कर दिया जाता, उनमें गाय की कुरबानी देकर हिन्दुओं को नीचा दिखाया जाता था। हिन्दुओं की लड़कियों को उठा कर अपने हरम की शोभा बढ़ाना अपने आपको धार्मिक सिद्ध करने का प्रमाण था। ऐसे अत्याचारी परिवेश में वीर शिवाजी का संघर्ष हिन्दुओं के लिए एक वरदान से कम नहीं था। हिन्दू जनता के कान सदियों से यह सुनने के लिए तरस गए थे कि किसी हिन्दू ने मुसलमान पर विजय प्राप्त की। 1642 से शिवाजी ने बीजापुर सल्तनत के किलों पर अधिकार करना आरंभ कर दिया। कुछ ही वर्षों में उन्होंने मुगल किलों को अपनी तलवार का निशाना बनाया। औरंगजेब ने शिवाजी को परास्त करने के लिए अपने बड़े बड़े सरदार भेजे पर सभी नाकामयाब रहे। आखिर में धोखे से शिवाजी को आगरा बुलाकर कैद कर लिया, जहाँ से शिवा अपनी चतुराई से बच निकले। औरंगजेब पछताने के सिवाय कुछ न कर सका। शिवाजी ने मराठा हिन्दू राज्य की स्थापना की और अपने आपको छत्रपति पदनाम से सुशोभित किया। शिवाजी की अकाल मृत्यु से उनका राज्य महाराष्ट्र तक ही फैल सका था। उनके पुत्र शम्भाजी में चाहे कितनी भी कमियाँ हों पर अपने बलिदान से शम्भाजी ने अपने सभी पाप धो डाले। औरंगजेब ने शम्भाजी के आगे दो ही विकल्प रखे थे- या तो मृत्यु का वरण कर ले अथवा इस्लाम को ग्रहण कर ले। वीर शिवाजी के पुत्र ने भयंकर अत्याचार सहकर मृत्यु का वरण कर लिया पर इस्लाम को ग्रहण कर अपनी आत्मा से दगाबाजी नहीं की और हिन्दू स्वतंत्रता रुपी वृक्ष को अपने रुधिर से सींच कर और हरा भरा कर दिया।

शिवाजी की मृत्यु के पश्चात् औरंगजेब ने सोचा कि मराठों के राज्य को नष्ट कर दे, परन्तु मराठों ने वह आदर्श प्रस्तुत किया जिसकी हिन्दू जाति को सख्त आवश्यकता थी। उन्होंने किले आदि त्याग कर पहाड़ों और जंगलों की राह ली। संसार में पहली बार मराठों ने छापामार युद्ध को आरंभ किया। जंगलों में से मराठे आंधी की गति से आते और भयंकर मार काट कर, मुगलों के शिविर को लूट कर वापिस जंगलों में भाग जाते। शराब-शबाब की शौकीन आरामपस्त मुगल सेना इस प्रकार के युद्ध के लिए कहीं से भी तैयार नहीं थी। दक्कन में मराठों से 20 वर्षों के युद्ध में औरंगजेब बूढ़ा होकर निराश हो गया, करीब 3 लाख की उसकी सेना काल का ग्रास बन गई। उसके सभी विश्वासपात्र सरदार या तो मर गए अथवा बूढ़े हो गए, पर वह मराठों के छापामार युद्ध से पार न पा सका। अंत में औरंगजेब की भी 1705 में मृत्यु हो गई परन्तु तक तक पंजाब में सिख, राजस्थान में राजपूत, बुंदेलखंड में छत्रसाल, मथुरा, भरतपुर में जाटों आदि ने मुगलिया सल्तनत की ईंट से ईंट बजा दी थी। मराठों द्वारा औरंगजेब को दक्कन में उलझाने से मुगलिया सल्तनत इतनी कमजोर हो गई कि बाद में उसके उताराधिकारियों की आपसी लड़ाई के कारण ताश के पत्तों के समान वह ढ़ह गई। यह उलटी गंगा बहाने का सारा श्रेय वीर शिवाजी को जाता है।

स्वार्थ से बड़ा जाति अभिमान

इतिहास इस बात का गवाह है कि मुगलों का भारत में राज हिन्दुओं की एकता में कमी होने के कारण ही स्थापित हो सका था। अकबर के काल से ही हिन्दू राजपूत एक ओर अपने ही देशवासियों से, अपनी ही कौम से अकबर के लिए लड़ रहे थे वहीं दूसरी ओर अपनी बेटियों की डोलियों को मुगल हरमों में भेज रहे थे। औरंगजेब ने जीवन की सबसे बड़ी गलती यही की कि उसने काफिर समझ कर राजपूतों का अपमान करना आरंभ कर दिया, जिससे न केवल उसकी शक्ति कम हो गई अपितु उसकी सल्तनत में चारों ओर से विद्रोह आरंभ हो गया। भ्रातृत्व की भावना को पनपने का मौका मिला और भाई ने भाई को अपने स्वार्थ और परस्पर मतभेद को त्याग कर गले से लगाया।

शिवाजी के पुत्र राजाराम के नेतृत्व में मराठों ने जिनजी के किले से संघर्ष आरंभ कर दिया था। मराठों के सेनापति खान्डोबलाल ने उन मराठा सरदारों को, जो कभी जिनजी के किले को घेरने में मुगलों का साथ दे रहे थे, अपनी ओर मिलाना आरंभ कर दिया। नागोजी राणे को पत्र लिख कर समझाया गया कि वे मुगलों का साथ न देकर अपनों का साथ दें, जिससे देश, धर्म और जाति का कल्याण हो सके। नागोजी ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार किया और अपने 5,000 आदमियों को साथ लेकर वे मराठा खेमे में आ मिले।

अगला लक्ष्य शिरका था जो अभी भी मुगलों की चाकरी कर रहा था। शिरका ने अपने अतीत को याद करते हुए राजाराम के उस फैसले को याद दिलाया जब राजाराम ने यह आदेश जारी किया था कि जहाँ भी कोई शिरका मिले उसे मार डालो। शिरका ने यह भी कहा कि राजाराम क्या, वह तो उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा है जब पूरा भोंसले खानदान मृत्यु को प्राप्त होगा तभी उसे शांति मिलेगी। खान्डोबलाल शिरका के उत्तर को पाकर तनिक भी हतोत्साहित नहीं हुआ। उसने शिरका को पत्र लिखकर कहा कि यह समय परस्पर मतभेदों को प्रदर्शित करने का नहीं है। मेरे भी परिवार के तीन सदस्यों को राजाराम ने हाथी के तले कुचलवा दिया था। मैं राजाराम के लिए नहीं, अपितु हिन्दू स्वराज्य के लिए संघर्ष कर रहा हूँ।

इस पत्र से शिरका का हृदय द्रवित हो गया और उसके भीतर हिन्दू स्वाभिमान जाग उठा। उसने मराठों का हरसंभव साथ दिया और मुगलों के घेरे से राजाराम को छुड़वा कर सुरक्षित महाराष्ट्र पहुँचा दिया। काश अगर जयचंद ने यही शिक्षा मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय ले ली होती तो भारत से पृथ्वीराज चौहान के हिन्दू राज्य का कभी अस्त न होता।

महाराष्ट्र से भारत के कोने कोने तक

मराठों ने मराठा संघ की स्थापना कर, महाराष्ट्र के सभी सरदारों को एक सूत्र में बांध कर, अपने सभी मतभेदों को भुला कर, संगठित हो अपनी शक्ति का पुनः निर्माण किया जो शिवाजी महाराज की मृत्यु के बाद लुप्त सी हो गई थी।

इसी शक्ति से मराठा वीर सम्पूर्ण भारत पर छाने लगे। महाराष्ट्र से तो मुगलों को पहले ही उखाड़ दिया गया था। अब शेष भारत की बारी थी। सबसे पहले निज़ाम के होश ठिकाने लगाकर मराठा वीरों द्वारा बची हुई चौथ और सरदेशमुखी की राशी को वसूला गया। दिल्ली में अधिकार को लेकर छिड़े संघर्ष में मराठों ने सैयद बंधुओं का साथ दिया। 70,000 की मराठा फौज को लेकर हिन्दू वीर दिल्ली पहुँच गये। इससे दिल्ली के मुसलमान क्रोध में आ गये। इस मदद के बदले मराठों को सम्पूर्ण दक्षिण भारत से चौथ और सरदेशमुखी वसूलने का अधिकार मिल गया।

मालवा के हिन्दू वीरों ने जय सिंह के नेतृत्व में मराठों को मुगलों के राज से छुड़वाने के लिए प्रार्थना भेजी क्योंकि उस काल में केवल मराठा शक्ति ही मुगलों के आतंक से देश को स्वतंत्र करा सकती थी। मराठा वीरों की फौज ने मुगलों को हरा कर भगवा झंडे से पूरे प्रान्त को रंग दिया।

बुंदेलखंड में वीर छत्रसाल ने अपने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की थी। शिवाजी और उनके गुरु रामदास को वे अपना आदर्श मानते थे। वृद्धावस्था में उनके छोटे से राज्य पर मुगलों ने हमला कर दिया जिससे उन्हें राजधानी त्याग

कर जंगलों की शरण लेनी पड़ी। इस विपत्ति काल में वीर छत्रसाल ने मराठों को सहयोग के लिए आमंत्रित किया। मराठों ने वर्षा ऋतु होते हुए भी आराम कर रही मुगल सेना पर धावा बोल दिया और उन्हें मार भगाया। वीर छत्रसाल ने अपनी राजधानी में फिर से प्रवेश किया। मराठों के सहयोग से आप इतने प्रसन्न हुए कि आपने बाजीराव को अपना तीसरा पुत्र बना लिया और उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके राज्य का तीसरा भाग बाजीराव को मिला।

इसके पश्चात् मराठा सेना गुजरात की ओर पहुँच गई। मुगलों ने अभयसिंह को मराठों से युद्ध लड़ने के लिये भेजा। उसने एक स्थान पर धोखे से मराठा सरदार की हत्या कर दी, पर मराठा कहाँ मानने वाले थे। उन्होंने युद्ध में जो जोहर दिखाए कि मराठा तलवार की धाक सभी ओर जम गई। इधर दामाजी गायकवाड़ ने अभयसिंह के जोधपुर पर हमला कर दिया जिसके कारण उसे वापिस लौटना पड़ा। मराठों ने बरोडा और अहमदाबाद पर कब्जा कर लिया।

दक्षिण में अरकाट में हिन्दू राजा को गद्दी से उतार कर एक मुस्लिम वहाँ का नवाब बन गया था। हिन्दू राजा के मदद मांगने पर मराठों ने वहाँ पर आक्रमण कर दिया और मुस्लिम नवाब पर विजय प्राप्त की। मराठों को वहाँ से एक करोड़ रुपया प्राप्त हुआ। इससे मराठों का कार्यक्षेत्र दक्षिण तक फैल गया।

इसी प्रकार बंगाल में भी गंगा के पश्चिमी तट तक मराठों का विजय अभियान जारी रहा एवं बंगाल से भी पर्याप्त राशि वसूल कर मराठे अपने घर लौटे। मैसूर में भी पहले हैदर अली और बाद में टीपू सुल्तान से मराठों ने चौथ वसूली की थी।

दिल्ली के कागजी बादशाह ने फिर से मराठों का विरोध करना आरंभ कर दिया। बाजीराव ने मराठों की फौज को जैसे ही दिल्ली भेजा, उनके किलों की नीवें मराठा सैनिकों की पदचाप से हिलने लगी। आखिर में अपनी भूल और प्रयाश्चित करके मराठा क्षत्रियों से उन्होंने पीछा छुड़ाया।

अहमद शाह अब्दाली से युद्ध के काल में ही मराठा उसका पीछा करते हुए सिंध नदी तक पहुँच गये थे। पंजाब की सीमा पर कई शताब्दियों के मुस्लिम शासन के पश्चात् मराठा घोड़े सिंध नदी तक पहुँच पाए थे। मराठों के इस प्रयास से एवं पंजाब में मुस्लिम शासन के कमजोर होने से सिख सत्ता को अपनी उन्नति करने का यथोचित अवसर मिला जिसका परिणाम आगे महाराजा रणजीत सिंह के शक्तिशाली राज्य के रूप में निकला। इस प्रकार सिंध के किनारों से लेकर मदुरै तक, कोंकण से लेकर बंगाल तक मराठा सरदार सभी प्रान्तों से भगवा पताका को फहरा कर हिन्दू पद पादशाही को स्थिर कर रहे थे। इन सब प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि करीब एक शताब्दी तक मराठों का भारत देश पर राज रहा जो कि विशुद्ध हिन्दू राज्य था।

थल से जल तक

वीर शिवाजी के समय से ही मराठा शक्ति अपनी जल सेना को मजबूत करने में लगी हुई थी। इस कार्य का नेतृत्व कान्होजी आंग्रे के कुशल हाथों में था। कान्होजी को जंजिरा के मुस्लिम सिद्दी, गोआ के पुर्तगाली, बम्बई के अंग्रेज और डच लोगों का सामना करना पड़ता था जिसके लिए उन्होंने बड़ी फौज की भर्ती की थी। इस फौज के रख-रखाव के लिये आप उस रास्ते से आने-जाने वाले सभी व्यापारी जहाजों से कर लेते थे। अंग्रेज यही काम सदा से करते आये थे, इसलिए उन्हें यह कैसे सहन होता। बम्बई के समुद्र तट से 16 मील की दूरी पर खाण्डेरी द्वीप पर मराठों का सशक्त किला था। इतिहासकार कान्होजी आंग्रे को समुद्री डाकू के रूप में लिखते हैं, जबकि वे कुशल सेनानायक थे। 1717 में बून चार्ल्स बम्बई का गवर्नर बन कर आया। उसने मराठों से टक्कर लेने की सोची। उसने जहाजों का बड़ा बेड़ा और पैदल सेना तैयार कर मराठों के समुद्री दुर्ग पर हमला कर दिया। अंग्रेजों ने अपने जहाजों के नाम भी रिवेंज, विक्ट्री, हॉक और हंटर आदि रखे थे। पूरी तैयारी के साथ अंग्रेजों ने मराठों के दुर्ग पर हमला किया पर मराठों के दुर्ग कोई मोम के थोड़े ही बने थे। अंग्रेजों को मुँह की खानी पड़ी। अगले साल फिर हमला किया, फिर मुँह की खानी पड़ी। तंग आकर इंग्लैंड के महाराजा ने कोमोडोर मैथयू के नेतृत्व में एक बड़ा बेड़ा मराठों से लड़ने के लिए भेजा। इस बार पुर्तगाल की सेना को भी साथ में ले लिया गया। बड़ा भयानक युद्ध हुआ। कोमोडोर मैथयू स्वयं आगे बढ़ कर नेतृत्व कर रहा था। मराठा सैनिक ने उसकी जांघ में संगीन घुसेड़ दी, उसने दो गोलियाँ भी चलाई, पर वे खाली गई क्योंकि मराठों के आतंक और जल्दबाजी में वह उसमें बारूद ही भरना भूल गया। अंत में अंग्रेजों और पुर्तगालियों की संयुक्त सेना की हार हुई। दोनों एक दूसरे को कोसते हुए वापिस चले गए। डच लोगों की यही गति बनी। मराठे थल से लेकर जल तक के राजा थे।

सिद्दी मुसलमानों का अत्याचार

ब्रह्मेन्द्र स्वामी को महाराष्ट्र में वही स्थान प्राप्त था जो स्थान शिवाजी के काल में समर्थगुरु रामदास को प्राप्त था। सिद्दी कोंकण में राज करते थे मराठों के विरुद्ध पुर्तगालियों, अंग्रेजों और डच

आदि की सहायता से उनके इलाकों पर हमले करते थे। इसके अलावा उनका एक पेशा निर्दयता से हिन्दू लड़के और लड़कियों को उठा कर ले जाना और मुसलमान बनाना भी था। इसी सन्दर्भ में सिद्दी लोगों ने भगवान परशुराम के मंदिर को तोड़ डाला। यह मंदिर ब्रह्मेन्द्र स्वामी को बहुत प्रिय था। उन्होंने निश्चय किया कि वे कोंकण देश में जब तक वापस नहीं आयेंगे जब तक उनके पीछे अत्याचारी मलेच्छ को दंड देने वाली हिन्दू सेना नहीं होगी क्योंकि सिद्दी लोगों ने मंदिर और ब्राह्मण का अपमान किया है। स्वामीजी वहाँ से सतारा चले गए और अपने शिष्यों शाहू जी और बाजीराव को पत्र लिखकर अपने संकल्प की याद दिलाते रहे। मराठे उचित अवसर की प्रतीक्षा करने लगे। सिद्दी लोगों का आपसी युद्ध छिड़ गया, बस मराठे तो इसी की प्रतीक्षा में थे। उन्होंने उसी समय सिद्दियों पर आक्रमण कर दिया। जल में जंजिरा के समीप सिद्दियों के बेड़े पर आक्रमण किया गया और थल पर उनकी सेना। मराठों की शानदार विजय हुई और कोंकण प्रदेश मराठा गणराज्य का भाग बन गया। ब्रह्मेन्द्र स्वामी ने प्राचीन ब्राह्मणों के समान क्षत्रियों की पीठ थप-थपा कर अपने कर्तव्य का निर्वहन किया था। वैदिक संस्कृति ऐसे ही ब्राह्मणों के त्याग और तपस्या के कारण प्राचीन काल से सुरक्षित रही है।

गोआ में पुर्तगाली अत्याचार

गोआ में पुर्तगाली सत्ता ने भी धार्मिक मतान्धता में कोई कसर न छोड़ी थी। हिन्दू जनता को ईसाई बनाने के लिए दमन की नीति का प्रयोग किया गया था। हिन्दू जनता को अपने उत्सव मनाने की मनाही थी। हिन्दुओं के गाँव के गाँव ईसाई न बनने के कारण नष्ट कर दिए गये थे। सबसे अधिक अत्याचार ब्राह्मणों पर किया गया था। सैकड़ों मंदिरों को तोड़ कर गिरिजाघर बना दिया गया था।

कोंकण प्रदेश में भी पुर्तगाली ऐसे ही अत्याचार करने लगे थे। ऐसे में वहाँ की हिन्दू जनता ने तंग आकर बाजीराव से गुप्त पत्र व्यवहार आरंभ किया और गोवा के हालात से उन्हें अवगत कराया। मराठों ने कोंकण में बड़ी सेना एकत्र कर ली और समय पाकर पुर्तगालियों पर आक्रमण कर दिया। उनके एक-एक कर कई किलों पर मराठों का अधिकार हो गया। पुर्तगाल से अंटोनियो के नेतृत्व में बेड़ा लड़ने आया पर मराठों के सामने उसकी एक न चली। वसीन के किले के चारों और मराठों ने चिम्माजी अप्पा के नेतृत्व में घेरा डाल दिया था। वह घेरा कई दिनों तक पड़ा रहा था। अंत में आवेश में आकार अप्पाजी ने कहा कि तुम लोग अगर मुझे किले में जीते जी नहीं ले जा सकते तो कल मेरे सर को तोप से बांध कर उसे किले की दीवार पर फेंक देना, कम से कम मरने के बाद तो मैं किले मैं प्रवेश कर सकूँगा। वीर सेनापति के इस आह्वान से सेना में अद्वितीय जोश भर गया और अगले दिन अपनी जान की परवाह न कर मराठों ने जो हमला बोला कि पुर्तगाल की सेना के पाँव ही उखड़ गए और किला मराठों के हाथ में आ गया। यह आक्रमण गोआ तक फैल जाता पर तभी उत्तर भारत पर नादिर शाह के आक्रमण की खबर मिली। उस काल में केवल मराठा संघ ही ऐसी शक्ति थी जो इस प्रकार की राष्ट्रीय विपदा का प्रतिकार कर सकती थी। नादिरशाह ने दिल्ली पर आक्रमण कर 15,000 मुसलमानों को अपनी तलवार का शिकार बनाया। उसका मराठा पेशवा बाजीराव से पत्र व्यवहार आरंभ हुआ। जैसे ही उसे सूचना मिली कि मराठा सरदार बड़ी फौज लेकर उससे मिलने आ रहे हैं, वह दिल्ली को लूटकर, मुगलों के सिंहासन को उठा कर अपने देश वापिस चला गया।

पहाड़ी चूहे से महाराजाधिराज तक

दिल्ली में अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण के काल में रोहिल्ला सरदार नजीब खान ने दिल्ली में बाबरवंशी शाह आलम पर हमला कर उसकी आँखें फ ोड़ दी और उसपर भयानक अत्याचार किये। मराठा सरदार महाजी सिंधिया ने दिल्ली पर हमला बोल कर नजीब खां को उसके किये की सजा दी। इतिहास गवाह है कि जिस औरंगजेब ने वीर शिवाजी की वीरता से चिढ़कर अपमानजनक रूप से उन्हें पहाड़ी चूहा कहा था उसी औरंगजेब के वंशज ने मराठा सरदार को पूना के पेशवा के लिए 'वकिले मुतालिक' अर्थात् 'महाराजाधिराज' पदनाम से सुशोभित किया।

पहले पानीपत के मैदान में मराठों को हार का सामना करना पड़ा, पर इससे अब्दाली की शक्ति भी क्षीण हो गई और अब्दाली वहीं से वापस अपने देश चला गया। कालांतर में मराठों के आपसी टकराव ने मराठा संघ की शक्ति को सीमित कर दिया जिससे उनकी 1818 में अंग्रेजों से युद्ध में हार हो गई और हिन्दू पद पादशाही के मराठा स्वराज्य का सूर्य सदा सदा के लिए अस्त हो गया।

इतिहास इस बात का भी साक्षी है कि जब भी किसी जाति पर अत्याचार होते हैं, उनका अन्यायपूर्वक दमन किया जाता हैं तब-तब उसी जाति से अनेक शिवाजी, अनेक प्रताप, अनेक गुरु गोबिंद सिंह उठ खड़े होते हैं जो अत्याचारी को समूल नष्ट कर देते हैं।

कहानी

प्रेम का वास

प्रस्तुति : यज्ञदत्त आय

एक औरत अपने घर से निकली, उसने घर के सामने सफेद लम्बी दाढ़ी में तीन साधु-महात्माओं को बैठे देखा। वह उन्हें पहचान नहीं पाई।

उसने कहा, 'मैं आप लोगों को नहीं पहचानती, बताइए क्या काम है?'

'हमें भोजन करना है।' साधुओं ने कहा।

'ठीक है ! कृपया मेरे घर में पधारिये और भोजन ग्रहण कीजिये।'

'क्या तुम्हारा पति घर में है?' एक साधु ने प्रश्न किया।

'नहीं, वे कुछ देर के लिए बाहर गए हैं।' उसने उत्तर दिया।'

'तब हम अन्दर नहीं आ सकते' तीनों एक साथ बोले।

थोड़ी देर में पति घर वापस आ गया, उसे साधुओं के बारे में पता चला तो उसने तुरंत अपनी पत्नी से उन्हें पुनः आमंत्रित करने के लिए कहा। औरत ने ऐसा ही किया, वह साधुओं के समक्ष गयी और बोली,-'स्वामी जी, अब मेरे पति वापस आ गए हैं, कृपया आप लोग घर में प्रवेश कीजिए!'

'हम किसी घर में एक साथ प्रवेश नहीं करते।' साधुओं ने स्त्री को बताया।

'ऐसा क्यों है?' औरत ने आश्चर्य से पूछा।

जवाब में मध्य में खड़े साधु ने कहा- 'पुत्री, मेरी दायीं ओर खड़े साधु का नाम 'धन' और बायीं ओर खड़े साधु का नाम 'सफलता' है, और मेरा नाम 'प्रेम' है। अब जाओ और अपने पति से विचार-विमर्श कर के बताओ कि तुम हम तीनो में से किसे बुलाना चाहती हो।'

औरत अन्दर गयी और अपने पति को सारी बात बता दी।

पति बेहद खुश हो गया। 'वाह, आनंद आ गया, चलो जल्दी से 'धन' को बुला लेते हैं, उसके आने से हमारा घर धन-दौलत से भर जाएगा, और फिर कभी पैसों की कमी नहीं होगी।'

औरत बोली, 'क्यों न हम सफलता को बुला लें, उसके आने से हम जो करेंगे वह सही होगा, और हम देखते-देखते धन-दौलत के मालिक भी बन जायेंगे।'

'हम्म, तुम्हारी बात भी सही है, पर इसमें मेहनत करनी पड़ेगी, मुझे तो यही उचित लगता है कि धन को ही बुला लेते हैं।' पति बोला।

थोड़ी देर तक उनकी बहस चलती रही पर वे किसी निश्चय पर नहीं पहुच पाए, और अंततः निश्चय किया कि वे साधुओं से यह कहेंगे कि धन और सफलता में जो आना चाहे आ जाये।

औरत झट से बाहर गयी और उसने यह आग्रह साधुओं के सामने दोहरा दिया।

उसकी बात सुनकर साधुओं ने एक दूसरे की ओर देखा और बिना कुछ कहे घर से दूर जाने लगे।

'अरे ! आप लोग इस तरह वापस क्यों जा रहे हैं?' औरत ने उन्हें रोकते हुए पूछा।

'पुत्री, दरअसल हम तीनों साधु इसी तरह द्वार-द्वार जाते हैं, और हर घर में प्रवेश करने का प्रयास करते हैं, जो व्यक्ति लालच में आकर धन या सफलता को बुलाता है हम वहां से लौट जाते हैं, और जो अपने घर में प्रेम का वास चाहता है उसके यहाँ बारी-बारी से हम दोनों भी प्रवेश कर जाते हैं। इसलिए इतना याद रखना कि जहाँ प्रेम है, वहाँ धन और सफलता की कमी नहीं होती।'

ऐसा कहते हुए धन और सफलता नामक साधुओं ने अपनी राह ली।

पुत्री, दरअसल हम तीनों साधु इसी तरह द्वार-द्वार जाते हैं, और हर घर में प्रवेश करने का प्रयास करते हैं, जो व्यक्ति लालच में आकर धन या सफलता को बुलाता है हम वहां से लौट जाते हैं, और जो अपने घर में प्रेम का वास चाहता है उसके यहाँ बारी-बारी से हम दोनों भी प्रवेश कर जाते हैं। इसलिए इतना याद रखना कि जहाँ प्रेम है, वहाँ धन और सफलता की कमी नहीं होती।

सुखी एवं दीर्घ जीवन कैसे प्राप्त हो?

☐ देवराज आर्य, मुख्याध्यापक सेवानिवृत्त रोहतक मार्ग, जीन्द

धर्म के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये वेदों ने मनुष्य की दिनचर्या का निर्धारण किया है। जो मनुष्य वैदिक नित्य कर्मों का भली-भांति अनुष्ठान करते हैं, वे सुख-शान्ति, आरोग्य, समृद्धि के साथ पूर्ण आयु प्राप्त करते हैं तथा मुक्तिमार्ग के पथिक बनते हैं।

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।
यजु० २५/१५

अर्थः- हे परमेश्वर आपकी कृपा से (ऋजूयतां देवानाम्) सरलता, निष्कपटता से व्यवहार करने वाले दिव्य गुण-कर्म-स्वभाव वाले विद्वानों की (भद्रा सुमतिः) कल्याण कारिणी उत्तम मति, (देवानां राति) दिव्य दाताओं की दानशीलता (नः अभि निवर्तताम्) उन जैसे ये गुण हमारे अन्दर भी आ जायें। इन गुणों की प्राप्ति के लिये (वयम्) हम लोग (देवानाम्) उन देवों, उत्तम विद्वानों, दाताओं की (सख्यम् उपसेदिम) मित्रता को प्राप्त करें। (देवाः) वे विद्वान उत्तम उपाय और ज्ञान तथा कर्मों के द्वारा (जीवसे) दीर्घ जीवन के लिये (नः आयुः प्रतिरन्तु) हमारी आयु को पूर्ण करायें-बढ़ाये।

अर्थात् यज्ञ=देवपूजा, संगतिकरण और दान से हमें सुखी एवं दीर्घ-जीवन की प्राप्ति हो ऐसी प्रभु से प्रार्थना है। आदरणीय बन्धुओं, पूज्या मातृ शक्ति,

यदि हम चाहते हैं कि हमारा जीवन सुख-शान्ति और आनन्द से भरपूर हो, हमारी आयु लम्बी हो तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष भी सहज में सिद्ध हो जायें तथा आनन्दमय जीवन जीने की कुन्जी हमें मिल जाये तो इसके लिये हमें दैवी सम्पदा का स्वामी बनना होगा। जरा सोचें आज हम कौन सी सम्पदा एकत्र कर रहे हैं? हम एकत्र तो कर रहे हैं आसुरी सम्पदा और चाहते हैं सुख-शान्ति एवं दीर्घ जीवन! ऐसा नहीं हो सकता।

दैवी और आसुरी सम्पदा क्या होती है?

पहले दैवी सम्पदा को हम जानें। इस विषय में उपनिषद् कहती हैं कि तत्त्व ज्ञान प्राप्त किये बिना न तो सांसारिक दुःखों से छुटकारा हो सकता है और न ही शान्ति प्राप्त हो सकती है। तत्त्वज्ञान प्राप्त करने के अधिकारी हम कैसे बनें? इसके लिये षट् सम्पत्ति की आवश्यकता है और वह षट् सम्पत्ति है- शम्, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान। इन छः साधनों को षट् सम्पत्ति कहते हैं। मानव जीवन को सुखी एवं दीर्घजीवी बनाने के लिये इस दैवी सम्पत्ति को एकत्र करना होगा।

मनु महाराज इस विषय में कहते हैं किः-

वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः।
धर्म क्रियाऽत्मचिन्ता च निःश्रेयसकरं परम्।। १२/८३

वेदों का अभ्यास अर्थात् स्वाध्याय, तप=व्रतसाधना, ज्ञान=सत्यविद्याओं की प्राप्ति, इन्द्रिय संयम, धर्म क्रिया=धर्म पालन अर्थात् कर्त्तव्यपालन एवं यज्ञ आदि धार्मिक क्रियाओं का अनुष्ठान और आत्मचिन्ता=परमात्मा का ज्ञान एवं ध्यान ये छः मोक्ष प्रदान करने वाले सुख शान्ति साधक सर्वोतम कर्म हैं।

वेद कहता है-'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्'

मनुष्य बनो और उत्तम, दिव्य सन्तान उत्पन्न करो। इसका सही उपाय है धर्माचरण अर्थात् वेदोक्त कर्मों का पालन। धर्म के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये वेदों ने मनुष्य की दिनचर्या का निर्धारण किया है। जो मनुष्य वैदिक नित्य कर्मों का भली-भांति अनुष्ठान करते हैं, वे सुख-शान्ति, आरोग्य, समृद्धि के साथ पूर्ण आयु प्राप्त करते हैं तथा मुक्तिमार्ग के पथिक बनते हैं। मानवमात्र के लिये वेद का आदेश है कि-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। यजु०

अर्थात्-हे मनुष्य! इस जगत् में वेदोक्त कर्मों को करते हुए ही सौ वर्ष या इससे अधिक वर्ष तक जीने की इच्छा कर। इस प्रकार वेदोक्त उत्तम कर्मों को करते हुए तुझ मनुष्य में

दैवी सम्पदा ही आत्मा-परमात्मा के साक्षात्कार का सही और सच्चा साधन है। वह मनुष्य जीवन किस काम का है, जिसने मानव-जीवन धारण करके भी उस जगत् नियन्ता को नहीं जाना।

कर्म लिप्त नहीं होता अर्थात् मनुष्य कर्मबन्धन में नहीं पड़ता। इसके अतिरिक्त मुक्ति प्राप्त करने का या भव बन्धन से छूटने का कोई दूसरा उपाय नहीं है।

वैदिक पंच महायज्ञों के द्वारा ही हमारा शारीरिक, बौद्धिक तथा आत्मिक विकास संभव है। भौतिकता के साथ आध्यात्मिक वातावरण यदि नहीं होगा तो घर, समाज, राष्ट्र एवं संसार कभी सुखी नहीं हो सकता। ये पंच-महायज्ञ हैं-ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ एवं अतिथियज्ञ। हम इन यज्ञों को अपनी दिनचर्या का अंग बनायें।

देवी तथा आसुरी गुणों के बारे में गीता का संदेश भी सुनते और पढ़ते जायें।

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोग व्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।। १६/१

गीता का कथन है कि निर्भयता, आत्मशुद्धि, आध्यात्मिक ज्ञान में रूचि, दान, इन्द्रिय दमन, आत्मसंयम, यज्ञपरायणता, वेदाध्ययन, तप अर्थात् धर्म के लिये कष्ट सहन करना, सरल स्वभाव अर्थात् सत्य, अहिंसा एवं दया आदि गुणों से सम्पन्न व्यक्ति दैवीय गुणों से युक्त माना जाता है। जो लोग इस दैवी प्रकृति में स्थित होते हैं, वे ही सुखशान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए मुक्ति के पथ पर अग्रसर होते हैं। आसुरी स्वभाव के लोग कैसे होते हैं?

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्।। गीता० १६/४

आसुरी स्वभाव वाले लोग धर्म तथा अध्यात्म मार्ग का ढोंग रचते हैं। उनके अन्दर अहंकार, घमण्ड, क्रोध, निष्ठुरता, अज्ञान, अपवित्रता तथा धर्मशास्त्र के विधि-विधानों में अश्रद्धा आदि आसुरी सम्पदा होने के कारण वे सदैव भौतिकवाद में लीन होकर काम-भोग, सम्पत्ति-संचय, इन्द्रियों की तुष्टि, ईश्वर में अविश्वास कर्मफल भोग को न मानने वाले, नास्तिक, वेदशास्त्र आदि विधिविधानों की परवाह न करते हुए अज्ञान, मोह, क्रोध, लोभ में फंसकर ईर्ष्यालु, क्रूर, अधर्मी बनकर, वास्तविक धर्म को न जानकर अपनी आत्मा का पतन कर लेते हैं तथा आसुरी योनि में बारम्बार जन्म ग्रहण करते हुए अत्यन्त नीच योनियों को तथा अधमगति को प्राप्त होते हैं।

वास्तव में दैवी सम्पदा ही वह वास्तविक सम्पत्ति है जो हमें उस 'देव' से मिला देती है जिसकी चाह जन्म जन्म से हमें मिलने की है। कहने का भाव यह है कि दैवी सम्पदा ही आत्मा-परमात्मा के साक्षात्कार का सही और सच्चा साधन है। वह मनुष्य जीवन किस काम का है, जिसने मानव-जीवन धारण करके भी उस जगत् नियन्ता को नहीं जाना। आज हम भौतिक वस्तुओं को देखकर, उनका अधिक से अधिक संग्रह करके अपने आपको धन्य समझते हैं, परन्तु यदि हमने उक्त दैवी सम्पदा को एकत्र नहीं किया अर्थात् हम "दैवी सम्पदा" के स्वामी नहीं बने तो बाहर से अमीर होते हुए भी हम भीतर से कंगाल हैं। भौतिक सम्पदा के साथ हम दैवी सम्पदा के स्वामी भी बनें जो कि बाहरी सम्पदा से लाखों गुणा उपयोगी एवं उत्तम है। यही मानव जीवन का मूल उद्देश्य एवं लक्ष्य है।

अब प्रश्न है कि इस "दैवी सम्पदा" को हम कैसे प्राप्त करें, कौन इसे प्राप्त करायेगा? सर्वप्रथम यजुर्वेद मन्त्र द्वारा बताया गया था कि जो निष्कपट एवं सरल स्वभाव के वैदिक विद्वान हैं, जिनके गुण, कर्म, स्वभाव दिव्य हैं अर्थात् जो दैवीय गुणों के भण्डार हैं, उनकी उत्तम शिक्षा के द्वारा हमें भी दिव्य गुण प्राप्त हो जायें वह परमेश्वर ऐसी कृपा हम पर करे। उस परमपिता परमात्मा की कृपा सहज में ही हमें प्राप्त है। केवल आवश्यकता है अपने हृदय के अन्दर दिव्य गुणों के धारण करने की, वेदोपदेश के अनुसार चलने तथा ऊपर बताये गये नियमों को जीवन में धारण कर दृढ़ संकल्प के साथ उन्हें अपनाने की।

क्या हम कभी वैदिक सिद्धान्तों को जानने के लिये किसी वैदिक विद्वान के सम्पर्क में रहे हैं? उनसे वैदिक ज्ञान, इन्द्रिय संयम, धर्म, ईश्वर जीव, प्रकृति के विषय में कोई वार्तालाप किया है, अपने घर पर कभी ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ या वेद शास्त्र के स्वाध्याय का आयोजन कराया है? शम, दम, उपरति, तितिक्षा क्या हैं, किसी विद्वान से श्रद्धापूर्वक उनका समाधान करने गये हैं? यदि अब तक ऐसा नहीं किया है तो वेदमन्त्र के अनुसार हम अभी से उन उत्तम दानदाताओं की, उन श्रेष्ठ विद्वानों, गुणवान् व्यक्तियों की मित्रता को प्राप्त करें अर्थात् उनकी शरण में जाएँ। वे धर्मात्मा संन्यासी तथा त्यागी, तपस्वी, ज्ञानी विद्वान् लोग अपने उत्तम ज्ञान तथा श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा हमें भी दिव्य जीवन जीने की कला में योग्यता प्राप्त करा देंगे। यही नहीं वे विद्वज्जन उत्तम वैदिक संस्कारों तथा पंच महायज्ञों को धारण करा हमें दीर्घ-जीवन जीने की औषधि खिलाकर दीर्घजीवी एवं सुखी कर देंगे। प्रभु हमें ऐसी सद्‌बुद्धि प्रदान करें कि हम इस दैवी सम्पदा के स्वामी बन जायें।

इन्द्रिय स्पर्श : क्यों और कैसे

इन वाक्यों का नाम इन्द्रिय-स्पर्श मन्त्र है, अर्थात् इनके उच्चारण के साथ-साथ अंगों को छूना होता है। यह क्यों? इसलिये कि मन की प्रवृत्ति इन अंगों की ओर हो। विद्यालयों में शिक्षा की उत्तम विधि यही समझी जाती है कि जो शब्द मुख से कहें, उनकी क्रिया हाथ से करें। सम्भव है, इस क्रिया के बिना भी मन इन अंगों का विचार कर सके, परन्तु सर्वत्र ऐसा होना आवश्यक नहीं, अतः क्रिया करनी ही श्रेष्ठ है। व्यायाम और आहार करते समय इन वाक्यों का अर्थ विचारें तो बहुत लाभ होगा। ऐसा करने से मुखादि इन्द्रियों की क्रियाओं में मन की क्रिया भी सम्मिलित हो जाएगी और क्रिया का फल कई गुणा अधिक होगा।

यदि हम इसी प्रकार शेष वाक्यों पर वक्त देते गये, तो सारी पुस्तक इन्हीं पर समाप्त हो जाएगी। आगे हम अतीव संक्षेप से काम लेकर पाठकों से विनय करेंगे कि दूसरी इन्द्रियों का महत्त्व स्वयं विचारें और उन्हें शक्तिमती बनाने के उपाय प्रयुक्त करें, ताकि शारीरिक बल की प्रार्थना सार्थक हो।

प्राणों का सविस्तार वर्णन प्राणायाम मन्त्रों की व्याख्या में आ जायेगा। यहाँ इतना जान लो कि जीवन का निर्भर प्राणों की यथार्थ गति पर है, और इस गति का उपाय प्राणायाम है। चक्षुओं की रक्षा के लिए उन पर प्रातः ठण्डे जल के छींटे मारा करो। थोड़े प्रकाश में न पढ़ो। सोकर न पढ़ो। अधिक प्रकाश में न पढ़ो। मिर्च आदि न खाओ। हरियावल पर दृष्टि रक्खा करो। इत्यादि २

कानों के लिये सावधानी यह रक्खो कि उन्हें तिनके आदि से छेड़ो नहीं। शेष रक्षा कान अपनी आप करते हैं।

नाभि का नाम इन ऋषि-वाक्यों में आने पर कई लोग शंका करते हैं कि वाक्, प्राण, चक्षु आदि तो मान लिया, काम के अंग हैं, परन्तु नाभि जो शरीर के मध्य भाग में एक गांठ-मात्र है, उसका बल बढ़ाना क्या? ऐसे महाशयों को किसी नवजात बालक का विचार करना चाहिए। उसकी नाभि के साथ एक नाड़ी लगी होती है, जिसे जात-कर्म संस्कार में काट लेते हैं।

गर्भ में माता के शरीर के साथ बच्चे का सम्बन्ध इसी नाड़ी द्वारा होता है। इसी से उसके अन्दर आहार आदि जाता है। नाभि के अन्दर एक ऐसा यन्त्र है, जो उस आहार को बच्चे के शरीर का अंश बनाता है। जन्म होने पर हम ने बाह्य नाड़ी को काट दिया, किन्तु नाभि के अन्दर का यंत्र नष्ट नहीं हुआ। अब हम अपना आहार मुख के रास्ते अन्दर ले जाते हैं सो बाह्य नाड़ी की आवश्यकता नहीं। किन्तु हमें वैद्य बताते हैं कि इस आहार का पाचन नाभिस्थ प्राण (उदान) से प्रदीप्त जठराग्नि द्वारा होता है।

योगियों की योग-सिद्धि मूल-स्थान से नाभि तक जल चढ़ाकर नाभि चक्र के साफ करने से होती है। गवैयों का प्रथम अर्थात् सब से नीचा स्वर नाभि से उठता है। यह है महत्त्व नाभि का।

अब इसे पुष्टि क्योंकर दें! प्राणायाम से। नाभि से अभिप्रायः नाभि के आस-पास का प्रदेश अर्थात उदर, कलेजा, तिल्ली, गुर्दा इत्यादि भी हो सकता है। इन सब अंगों को शक्तियुक्त करने के लिये व्यायाम करो। प्राणायाम से भी उन्हें बहुत लाभ होगा।

हृदय रुधिर का केन्द्र है। इसकी धड़कन ठीक हो तो स्वास्थ्य नहीं बिगड़ता। व्यायाम और प्राणायाम इसमें अपूर्व साधन हैं। कंठ प्राणों का मार्ग है, आहार की नाली है, नासिकाएं और मुख यहां मिलते हैं। गला जोर से दब जाए तो मृत्यु हो जाती है, प्राणायाम और आचमन करने से इस की अवस्था भी ठीक रह सकती है।

शिर प्रधान अंग है, इसमें वीर्य रहता है, जो सारे शरीर का सार है। विचार, स्मृति आदि शक्तियां भी शिर ही

में स्थिर हैं। शिर की पुष्टि विशेषतया ब्रह्मचर्य से होती है। बाहुओं, टांगों के लिए डंड आदि व्यायाम का अभ्यास करो। इसी से हाथ भी पुष्ट होंगे। नव-युवकों में बान पड़ रही है कि वे छोटे से छोटे भार भी उठाने से लजाते हैं। यह मानुषी-शक्ति का अपमान है। इससे हाथ श्वेत तो रहेंगे और मोम के हाथों की तरह देखने में सुन्दर भी प्रतीत होंगे। परन्तु वास्तविक काम करने योग्य हाथ नष्ट हो जाएंगे।

जितने अंगों का नाम ऊपर लिया गया, सब आपस में संगठित हैं। एक का विकास दूसरे का भी विकास है। इस लिए एक से ही साधन सब अंगों को लाभकारी हैं। सामान्यतः शरीर की पुष्टि के लिए सात्त्विक भोजन, व्यायाम और ब्रह्मचर्य साधन हैं, औषधियां और पाचन, पाक, नहीं।

इन वाक्यों का नाम इन्द्रिय-स्पर्श मन्त्र है, अर्थात् इनके उच्चारण के साथ-साथ अंगों को छूना होता है। यह क्यों? इसलिये कि मन की प्रवृत्ति इन अंगों की ओर हो। विद्यालयों में शिक्षा की उत्तम विधि यही समझी जाती है कि जो शब्द मुख से कहें, उनकी क्रिया हाथ से करें। सम्भव है, इस क्रिया के बिना भी मन इन अंगों का विचार कर सके, परन्तु सर्वत्र ऐसा होना आवश्यक नहीं, अतः क्रिया करनी ही श्रेष्ठ है। व्यायाम और आहार करते समय इन वाक्यों का अर्थ विचारें तो बहुत लाभ होगा।

ऐसा करने से मुखादि इन्द्रियों की क्रियाओं में मन की क्रिया भी सम्मिलित हो जाएगी और क्रिया का फल कई गुणा अधिक होगा। बड़े-बड़े योग्य पहलवानों की सम्मति है कि व्यायाम करते समय जिस अंग को बलिष्ठ करना हो, उसका विशेष ध्यान रखकर उसे बार-बार छूना चाहिये, इससे व्यायाम पूर्णतया सफल होगा। इन मन्त्रों में इन्द्रिय-स्पर्श का यही अभिप्राय है।

बालबोधिनी चेष्टा

एक बार एक शास्त्रार्थ में प्रतिपक्षी ने इंद्रिय स्पर्श क्रिया पर ठट्ठा किया था, कि यह तो एक ऐसे अबोध बालक का सा खेल है, जो अपने अंगों का नाम अभी अपनी माता से सीख रहा है। माता कहती है-वाक्- वह मुख पर हाथ रखता है और कहता है-वाक्- ऐसे ही चक्षुः चक्षु इत्यादि।

आर्य पण्डित ने इसका जो उतर दिया सो तो यथोचित ही था। वह ऊपर की व्याख्या में आ चुका है। परन्तु लेखक के मन में रह-रह कर स्फूर्ति होती है कि हमें बच्चों की सी चेष्टा से भी लज्जा क्यों हो? वेद कहता है कि-
ओ३म् स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये।

अर्थात परमात्मा को प्राप्त करना है तो बालक की सी वृत्ति धारण करो। जैसे थका हुआ और रुष्ट पिता भी जो क्रोध के समय किसी दूसरे प्राणी का मुख नहीं देख सकता, जब अपने जिगर के टुकड़े, आंखों के प्रकाश, तुतलाते बच्चे के पसारे हुए बाहु देख पाता है तो उसकी भुजाएं बढ़ने से रुक नहीं सकतीं। म्लान मुख खिल उठता है, मानो दिन भर की थकान एक अनजान बच्चे के मुसकराते मुखड़े ने दूर कर दी। ऐसे ही परमपिता परमात्मा जिन्हें योगी योग की कठिनाइयाँ झेल कर पाते हैं, जो सूधे इन्द्रियों से देखे नहीं जाते, हाथ फैलाये गले लगाने को दौड़ते हैं, जब उनका कोई अमृत-पुत्र मुग्ध बालक की तरह निष्कपट प्रेमरत हुआ तन्मय हो जाता है।

सन्ध्या में उपासक की वृत्ति वही तो होती है, जो एक सूधे सरल बच्चे की। प्रश्न किया जा सकता है कि इस अवस्था में भी इन्द्रियों को छूना और उनका नाम लेना किस अभिप्राय से है।

इसका अभिप्राय वही है जो माता अथवा पिता की गोदी में तुतलाते बच्चे का होता है, जब वह अंगों को छूता और उनका नाम लेता है।

हमें परमात्म-देव सिखा चुके कि यह वाक् है, यह प्राण है, इत्यादि। परन्तु हममें से कितने हैं जिन्हें यह पाठ याद है। वह वाक्-वाक् नहीं जो शब्दों का उच्चारण स्पष्ट, सस्वर, तीक्ष्ण करना हो तो तीक्ष्ण, मृदुता की अपेक्षा हो तो मृदु, गम्भीर अभीष्ट हो तो गम्भीर, नहीं कर सकती। इसके अतिरिक्त सत्य, मित, पिशुनता रहित, समयोचित भाषण ही तो वाणी का सार है।

चक्षुः चक्षु है जो एक ओर तो अर्जुन की भाँति वृक्ष की उच्चतम चोटी पर बैठी चिड़िया की आंख में भी पुतली को देख ले और उसमें इतना समाहित हो कि अन्य कुछ न देखे, दूसरी ओर जो देखे सो भद्र हो। अर्थात् दूरदर्शी भी हो और भद्रदर्शी भी, तब सार्थक नेत्र हैं।

ऐसे ही कान, जिनके भाग में ध्वनि के ज्ञान के साथ दिशा का ज्ञान आया है। वह भी ऐसे हों जैसे दशरथ महाराजा तथा पृथिवीराज चौहान के विषय में निर्णय है कि शब्द सुनकर आंखों से छिपे लक्ष्य को बाण से बेध देते हैं।

और इसी प्रकार दूसरी सारी इन्द्रियाँ जहाँ अपने विषय के ग्रहण में प्रबल हों, वहाँ अभद्र का ग्रहण न करें।

जब तक इस विषय में लेशमात्र भी त्रुटि है, पिता की गोदी में आंखों और कानों तथा नासिकाओं एवं अन्य इन्द्रियों को हाथ लगाकर चेतावनी लेने की आवश्यकता है कि यह श्रोत्र है, यह नेत्र हैं, यह प्राणों का मार्ग है, इत्यादि।

गरमी में होने वाले उपद्रव : कारण और उपाय

डॉ० नीरज यादव, एम0 डी0 आयुर्वेद आयुर्वेद चिकित्साधिकारी, बारां

हम कुछ छोटी-छोटी किन्तु महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रख कर, गर्मी से बचे रहकर, गर्मी का आनंद ले सकते हैं!

मित्रो, गरमी अपने चरम पर है और सूरज अपनी प्रखर किरणों की तीव्रता से संसार के जलीयांश (स्नेह) को सुखाकर वायु में रूखापन और ताप बढ़ा कर मनुष्यों के शरीर के ताप की भी वृद्धि कर रहा है!

गर्मी में होने वाले आम रोग-आम तौर पर गर्मी में लापरवाही के कारण ही होते हैं। शरीर में निर्जलीकरण, लू लगना, चक्कर आना, घबराहट होना, नकसीर आना, उलटी-दस्त, घमोरियाँ जैसी कई छोटी-बड़ी समस्याएँ हो जाती हैं।

इन बीमारियों के होने में प्रमुख कारण-

- गर्मी के मौसम में खुले शरीर, नंगे सर, नंगे पाँव धूप में चलना।
- तेज गर्मी में खाली पेट या प्यासा घर से बाहर जाना।
- कूलर या ए0सी0 से निकल कर तुरंत धूप में जाना।
- बाहर धूप से आकर तुरंत ठंडा पानी पीना, सीधे कूलर या ए0सी0 के सम्पर्क में बैठना।
- तेज मिर्च-मसाले, बहुत गर्म खाना, चाय, शराब इत्यादि का सेवन ज्यादा करना।
- सूती और ढ़ीले कपड़ों की जगह सिंथेटिक और कसे हुए कपड़े पहनना।

इत्यादि कारणों से गर्मी में शरीर में अनेक प्रकार के उपद्रव उत्पन्न हो सकते हैं, जिन्हें केवल लापरवाही ही कहा जा सकता है।

हम कुछ छोटी-छोटी किन्तु महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रख कर, इन सबसे बचे रहकर, गर्मी का आनंद ले सकते हैं!

उपचार से बचाव बेहतर होता है, है ना?

तो चलिए हम कुछ बचाव के तरीके जानें-

- गर्मी में सूरज अपनी प्रखर किरणों से जगत के स्नेह को पीता रहता है, इसलिए गर्मी में मधुर (मीठा), शीतल (ठंडा), द्रव तथा स्निग्ध खान-पान हितकर होता है!
- गर्मी में जब भी घर से निकलें, कुछ खा कर और पानी पी कर ही निकलें, खाली पेट नहीं।
- गर्मी में ज्यादा भारी, बासा भोजन नहीं करें, क्योंकि गर्मी में शरीर की जठराग्नि मंद रहती है, इसलिए वह भारी खाना पूरी तरह पचा नहीं पाती और जरुरत से ज्यादा खाने या भारी खाना खाने से उलटी-दस्त की शिकायत हो सकती है।
- गर्मी में सूती और हलके रंग के कपड़े पहनने चाहियें।
- चेहरा और सर रुमाल या साफे से ढ़क कर निकलना चाहिये।
- प्याज का सेवन करना चाहिए तथा बाहर निलते समय जेब में प्याज रखना चाहिये।
- बाजारू ठंडी चीजें नहीं, बल्कि घर की बनी ठंडी चीज़ों का सेवन करना चाहिये।
- ठंडा मतलब आम, खस, चन्दन, गुलाब, फालसा, संतरा, ठंडाई, सत्तू, दही की लस्सी, मट्ठा, गुलकंद का सेवन करना चाहिये।
- इनके अलावा लोकी, ककड़ी, खीरा, तोरई, पालक, पुदीना, नीबू, तरबूज आदि का सेवन अधिक करना चाहिये।
- शीतल जल गर्मी में महौषधि है। पानी का सेवन पर्याप्त मात्रा में कम से कम 2 से 3 लीटर रोजाना करना चाहिएँ
- अगर आप योग के जानकार हैं, तो सीत्कारी, शीतली तथा चन्द्र भेदन प्राणायाम एवं शवासन का अभ्यास कीजिये। ये शरीर में शीतलता का संचार करते हैं।
- पर्याप्त मात्रा में नींद लें, अधिक गर्मी में लगातार अधिक परिश्रम न करें।
- रात्रि को जल्दी सोने व प्रात: जल्दी उठने का अभ्यास करें। इस प्रकार आप गर्मी में भी प्रात:कालीन प्राकृतिक समीर का आनन्द ले सकते हैं और अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर सकते हैं।

तो मित्रो, इन कुछ छोटी-छोटी बातों का ध्यान रख कर गर्मी की गर्मी से हम स्वयं को बचा सकते हैं!

जानते हो!

–प्रतिष्ठा

डिज्नीलैंड कैलिफोर्निया में बनाया गया एक थीम पार्क है। इसके निर्माण की सारी कल्पना वाल्ट डिज्नी की है। डिज्नीलैंड परिसर में ५८ तरह की दर्शनीय चीजें हैं।

यह पार्क १७ जुलाई १९६५ में खुला था। इसके रखरखाव पर हर वर्ष भारी मात्रा में धन खर्च किया जाता है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इसको हर वर्ष रंग रोगन करवाने पर ही लगभग ५००० गैलन पेंट लग जाता है। इसमें हाईपेरियन थियेटर, बिग थंडर, माऊंटेन रेलरोड, कोलंबिया शिप, कार टून स्पिन और कास्टॅयूम्ड कैरेक्टर सहित कई तरह के साहसिक आनन्द लिये जा सकते हैं। पार्क की और पार्क में आने वालों की सुरक्षा के लिए भी इसकी प्रबंध समिति काफी सतर्क है।

हास्यम्

–आस्था गुड्डू

❖ अध्यापक ने परीक्षा में चार पृष्ठों का निबन्ध लिखने को दिया– विषय था– 'आलस्य क्या है?'

एक विद्यार्थी ने तीन पृष्ठों को खाली छोड़ दिया और चौथे पर बड़े–बड़े अक्षरों में लिखा– 'यही आलस्य है।'

❖ शरारती बच्चा– मां, क्या मैं भगवान की तरह दिखता हूं?

मम्मी– नहीं, पर तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो बेटा?

बच्चा– क्योंकि मां, मैं कहीं भी जाता हूं तो सब यही कहते हैं कि– 'हे भगवान फिर आ गया।'

❖ एक चोर तेजी से दौड़ता हुआ गली पर खड़े एक सिपाही से टकरा गया। सिपाही ने उसे डांटते हुए पूछा– कौन है? पहले चोर घबरा गया, फिर भागते हुए बोला–चोर। सिपाही ने उसे भागते देखकर कहा– अजीब आदमी है, पुलिस से मजाक करता है।

❖ एक शराबी सड़क पर जा रहा था, अचानक फिसलकर वह कीचड़ में गिर गया।

उसी वक्त बिजली चमकी तो शराबी बोला– हे भगवान, एक तो पहले कीचड़ में गिरा दिया और अब फोटो भी खींच रहे हो।

❖ अनाथालय संचालक ने एक कंजूस सेठ से कहा– सेठजी, आप अनाथालय के लिए क्या सेवा कर सकते हैं?

सेठ– श्रीमान मैं अपने चारों बच्चों को अनाथालय में भिजवा सकता हूँ।

❖ एक व्यक्ति पहली बार अकेला हेलीकॉप्टर उड़ाना सीख रहा था। पांच सौ फुट की ऊंचाई पर उड़ते–उड़ते अचानक हेलीकॉप्टर नीचे आ गिरा।

प्रशिक्षक ने पूछा–क्या हुआ?

जवाब मिला–कुछ नहीं, ऊपर जाकर मुझे ठंड लगने लगी, सो मैंनें पंखे बंद कर दिए थे।

बाल वाटिका

सम्पादक : सुमेधा

प्रहेलिका:

❖ वह आया जब हुआ सवेरा।
चला गया तो हुआ अंधेरा।।
तुम्हें जगाना उसका काम,
अब बतलाओ उसका नाम?

❖ अन्त कटे तो बनता कौआ।
प्रथम कटे हाथी का हौवा,
मध्य कटे बन जाए काम,
अब बतलाओ उसका नाम?

❖ कभी सफेद कभी है काला,
सबकी प्यास बुझाने वाला।
सावन करता मुझे सलाम।
अब बतलाओ मेरा नाम?

❖ बादल जैसा काला रंग
कभी नहीं करता हुडदंग
एक नाक से करता काम,
जल्द बताओ मेरा नाम?

उत्तर : *सूरज, कागज, बाल, हाथी*

विचार कणिका:

–प्रतिभा बहन

❖ आशावादी मनुष्य का जीवन प्रत्येक सूर्योदय के साथ नए सिरे से आरम्भ होता है।

❖ घमण्ड से आदमी फूल सकता है, फैल नहीं सकता।

❖ बोलने से पहले एक बार सोचिये, लिखने से पहले दो बार सोचिये और करने से पहले तीन बार सोचिये।

❖ धन से ज्ञान बड़ा है, क्योंकि धन को हम सुरक्षित रखते हैं जबकि ज्ञान हमें सुरक्षित रखता है।

❖ नीम के पेड़ को दूध घी से सींचने पर भी उसमें मिठास नहीं आ सकती।

❖ अभिमान से अकड़ कर चलने वाले, हर किसी से झगड़ा करने वाले जल्दी नष्ट हो जाते हैं।

❖ बिना मेहनत किये मुफ्त लेने की आदत– अधर्म का ही एक रूप है।

❖ देवता आलसियों के मित्र नहीं बनते।

दरवाजा

मुंशी प्रेमचन्द

सूरज क्षितिज की गोद से निकला, बच्चा पालने से-वही स्निग्धता, वही लाली, वही खुमार, वही रोशनी। मैं बरामदे में बैठा था। बच्चे ने दरवाजे से झांका। मैंने मुस्कराकर पुकारा। वह मेरी गोद में आकर बैठ गया। उसकी शरारतें शुरू हो गईं। कभी कलम पर हाथ बढ़ाया, कभी कागज पर। मैंने गोद से उतार दिया। वह मेज का पाया पकड़े खड़ा रहा। घर में न गया। दरवाजा खुला हुआ था।

एक चिड़िया फुदकती हुई आई और सामने के सहन में बैठ गई। बच्चे के लिए मनोरंजन का यह नया सामान था। वह उसकी तरफ लपका। चिड़िया जरा भी न डरी। बच्चे ने समझा अब यह परदार खिलौना हाथ आ गया। बैठकर दोनों हाथों से चिड़िया को बुलाने लगा। चिड़िया उड़ गई, निराश बच्चा रोने लगा। मगर अंदर के दरवाजे की तरफ ताका भी नहीं। दरवाजा खुला हुआ था।

गरम हलवे की मीठी पुकार आई। बच्चे का चेहरा चाव से खिल उठा। खोंचेवाला सामने से गुजरा। बच्चे ने मेरी तरफ याचना की आँखों से देखा। ज्यों-ज्यों खोंचे वाला दूर होता गया, याचना की आँखें रोष में परिवर्तित होती गईं। यहाँ तक कि जब मोड़ आ गया और खोंचे वाला आँख से ओझल हो गया तो रोष ने पुरजोर फरियाद की सूरत अख्तियार की।

मगर मैं बाजार की चीजें बच्चों को नहीं खाने देता। बच्चे की फरियाद ने मुझ पर कोई असर न किया। मैं आगे की बात सोचकर और भी तन गया। कह नहीं सकता बच्चे ने अपनी माँ की अदालत में अपील करने की जरूरत समझी या नहीं। आमतौर पर बच्चे ऐसे हालातों में माँ से अपील करते हैं। शायद उसने कुछ देर के लिए अपील मुल्तवी कर दी हो। उसने दरवाजे की तरफ रुख न किया। दरवाजा खुला हुआ था।

मैंने आँसू पोंछने के ख्याल से अपना फाउंटेनपेन उसके हाथ में रख दिया। बच्चे को जैसे सारे जमाने की दौलत मिल गई। उसकी सारी इंद्रियाँ इस नई समस्या को हल करने में लग गईं। एकाएक दरवाजा हवा से खुद-ब-खुद बंद हो गया। पट की आवाज बच्चे के कानों में आई। उसने दरवाजे की तरफदेखा। उसकी वह व्यस्तता तत्क्षण लुप्त हो गई। उसने फाउंटेन पेन को फेंक दिया और रोता हुआ दरवाजे की तरफचला क्योंकि दरवाजा बंद हो गया था।

विचार-सूत्र

-आभूषण धारण करने से सुन्दरता नहीं बढ़ती। असली सुन्दरता तो आत्मा की है जो विद्या से बढ़ती है।
-अज्ञान संसार का शत्रु नहीं है, शत्रु है ज्ञान का दम्भ।
-जिसने मौन की कला जान ली वह भीड़ में भी अकेला हो सकता है।
-रत्न मिट्टी से ही निकलते हैं, स्वर्ण मञ्जूषाओं में तो उन्हें रखा जाता है। **ईश्वरार्य प्र० अ०**

पहले कष्ट उठाना सीखो

गरमी से धरती का हर कोना तप जाता।
बादल तब आकर धरती की प्यास बुझाता।

दाना पहले मिट्टी में मिलकर गल जाता
तब पौधा बनता जिससे जग भोजन पाता।

सोना अग्नि में तप करके कुन्दन बनता।
भट्ठी मे तपकर उसका आभूषण बनता।।

लोहे को अग्नि में पहले खूब तपाते।
तब उससे औजार, यंत्र, हथियार बनाते।।

मानव यूं ही कष्ट देखकर डर जाता है।
कष्टों से तो मानव और निखर जाता है।।

दुःखों को भी खुश होकर अपनाना सीखो।
सुख चाहो तो पहले कष्ट उठाना सीखो।।

-सहदेव समर्पित

निर्भयता का आदर्श

सन 1918 में जब गढ़वाल में अकाल पड़ा था तो स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अकाल पीड़ितों की सहायता का विशाल आयोजन किया और अपने मानसिक पुत्रों; जिनमें हम सब गुरुकुल के विद्यार्थी सम्मिलित थ, को इस यज्ञ में अपनी-अपनी आहुति देने के लिए निमंत्रित किया। इस आदेश के बाद हम उस समय महाविद्यालय विभाग के प्राय: सब ब्रह्मचारी सेवा कार्यार्थ वहाँ पहुंच गए और श्रद्धेय स्वामीजी की अधीनता में कार्य करने लगे। मुझे क्योंकि पूज्य आचार्य जी के साथ पौड़ी, रूद्रप्रयाग, उत्तर काशी, केदारनाथ आदि अनेक स्थानों में जाने और कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था अत: मैं जानता हूँ कि उनका हृदय कितना सहानुभूतिपूर्ण और संवेदनशील था, किस प्रकार पीड़ितों की अवस्था को देखकर उनकी आँखों में आंसू आ जाते थे तथा उनके दु:ख निवारणार्थ वे आतुर रहते थे। कई बार वे 18, 20 मील तक हमारे साथ चलते थे और अपने आराम की तनिक भी चिन्ता न करते थे। उन्हीं दिनों की बात है कि गढ़वाल के एक स्थानीय पत्र में किसी आर्यसमाजी सज्जन ने वहां की सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध एक लेख लिखा जिससे गढ़वाली जनता में खलबली मच गई और कुछ अविवेकी गढ़वालियों ने आर्यसमाज के सर्वमान्य नेता के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द जी पर ही आक्रमण करने का निश्चय किया और इस उद्देश्य से पौड़ी, (गढ़वाल की राजधानी में) एक सभा बुलवाई। इसकी सूचना स्वामी जी को अपने कुछ भक्तों द्वारा मिल गई; जिन्होंने उनसे निवेदन किया कि वे पौड़ी न जायें ताकि दुष्ट उन पर किसी प्रकार का आक्रमण उस उत्तेजित अवस्था में न कर बैठें। वीर केसरी स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज न केवल रूद्र प्रयाग से पौड़ी पहुंचे बल्कि उस सभा में भी जा पहुंचे जहाँ उनके विरुद्ध बड़ी भयंकर उत्तेजना फैलाई जा रही थी। वीर नरसिंह के उस सभा में पहुचते ही सारा वातावरण परिवर्तित हो गया और स्वामीजी के निंदासूचक प्रस्ताव के स्थान में चारों ओर से उनकी सेवाओं के लिए अभिनन्दन किया जाने लगा। यह था निर्भयता का आदर्श जो ईश्वर के सच्चे भक्त उन वीर सन्यासी ने प्रत्येक समय दिखाया था और जिसके कारण सब विरोधिनी शक्तियों पर विजय प्राप्त करने में वे सफल हुए थे।

स्वामी श्रद्धानन्द के अनन्य भक्त एवं शिष्य पंडित धर्मदेव विद्यामार्तण्ड जी के स्वामीजी के विषय में अलभ्य संस्मरण

सन्दभ- सार्वदेशिक दिसम्बर 1946 प्रस्तुति : **डॉ0 विवेक आर्य**

प्रेरक प्रसंग

कड़वी बातें!

एक व्यक्ति एक साधु के पास उपदेश सुनने के लिए जाता था। एक बार उसने महात्मा जी से कहा- 'महाराज मेरे मन में एक दुविधा है। मेरे भाई ने कई वर्ष पहले मुझे बहुत से अपशब्द कहकर मेरा अपमान किया था। मेरे मन में उसके प्रति बहुत कटुता है। मैं उससे बदला लेना चाहता हूँ। अब अगले मास उसके बेटे की शादी है। वह चाहता है कि मैं उसकी शादी में जाऊँ और उसे माफ कर दूँ। लेकिन महाराज मेरा उसें माफ करने का मन नहीं है। आप ही बताईये, मैं क्या करूँ!' महात्मा जी उसकी बात सुनकर थोड़ा मुस्कराए। उन्होंने पूछा- 'अच्छा बताओ, परसों मैंने तुम्हें उपदेश में क्या कहा था?' उसने कहा 'महाराज यह तो मुझे याद नहीं।' महात्मा जी बोले- जरा प्रयास करो, याद करने की कोशिश करो। 'नहीं महाराज मुझे कुछ याद नहीं आ रहा।' इस पर साधु बोले- भले आदमी, परसों की बात तो तुम्हें याद नहीं है, और वर्षों की बात मन में लिए घूम रहे हो! इतना कहते ही उस व्यक्ति की आँखें खुल गई और वह अपने भाई से मिलने को तैयार हो गया।

वास्तव में लोग बुरे व्यवहार को तो याद रखते हैं, अच्छे व्यवहार को भूल जाते हैं। मन में द्वेष रखने से अपना ही मन खराब होता है। सकारात्मक विचार रखने से हमारे तन-मन स्वस्थ रहते हैं।

दूध का दिमाग

कांग्रेस की एक बैठक में सत्याग्रह आन्दोलन संबंधी प्रस्ताव पर विचार हो रहा था। जिस रिपोर्ट के आधार पर प्रस्ताव तैयार किया जाना था-वह फाईलों के ढेर में खो गई। गांधी जी ने राजेन्द्र बाबू से पूछा- आपने रिपोर्ट पढ़ ली थी न! कुछ याद है? राजेन्द्र बाबू ने कहा- 'हाँ मैंने रिपोर्ट पढ़ ली थी, मैं उसे लिखवा सकता हूँ।' राजेन्द्र बाबू उस रिपोर्ट को लिखवाने लगे। उधर रिपोर्ट की खोज हो रही थी। जब वे लगभग डेढ सौ पृष्ठ लिखवा चुके तब रिपोर्ट की मूल प्रति मिली। दोनों रिपोर्टों को मिलाया गया, उनमें अक्षरश: समानता थी। नेहरू जी ने व्यंग्य से राजेन्द्र बाबू से कहा- 'राजेन्द्र बाबू कमाल का दिमाग है आपका, यह आपको कहाँ से मिला?' राजेन्द्र बाबू ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया- 'यह अण्डे का नहीं, दूध का दिमाग है।'

बुद्धि या शरीर का बल बढ़ाने के लिए जो लोग अण्डे की वकालत करते हैं, उनके लिए यह एक बोध पाठ है।

प्रभु! आप से महान कोई और नहीं

❑प्रकाशचन्द्र कविरत्न

१

काज बिगड़े हमारे बना दो प्रभो!
डूबते हैं किनारे लगादो प्रभो!!
फिर रहे हैं भटकते कहीं के कहीं,
हो हृदय में बसे दृष्टि आते नहीं।
पर्दा अज्ञान का यह हटा दो प्रभो!!१
छोड़ कर आपका द्वार जाएँ कहाँ?
निज हृदय की व्यथा हम सुनाएँ कहाँ?
दर्द की आप ही अब दवा दो प्रभो!!२।।
भक्त हो जाएँ सच्चे तुम्हारे सभी,
सुख व दुख में न भूलें तुम्हें हम कभी।
ज्योति ऐसी हृदय में जगादो प्रभो!!३।।
है प्रकाशार्य की यह विनय आपसे,
लो बचा इस अविद्या कुमति पाप से।।
राह सच्ची सभी को सुझा दो प्रभो।।४।।

२

प्रभु आप से महान् कोई और नहीं।
तुमसा स्नेही दयानिधान कोई और नहीं।।
तुम हो अखिल जगत् के स्वामी
घट घट वासी अन्तर्यामी।
तुमसा शक्तिमान सुखखान कोई और नहीं।।१।।
प्रभु आप से महान् कोई और नहीं।।
रवि शशि धरती सिन्धु गगन में,
नयनन में और तन में मन में।
तुम हो सबमें विराजमान कोई और नहीं।।२।।
प्रभु आप से महान् कोई और नहीं।।
काहे तुमने मुझे विसारा
मैं हूँ अविचल भक्त तुम्हारा।
तुम हो मेरे प्रिय भगवान कोई और नहीं।।३।।
प्रभु आप से महान् कोई और नहीं।।
किसको मन की व्यथा सुनाएँ
किसके द्वारे प्रकाश जाएँ
दानी आप के समान कोई और नहीं।।४।।
प्रभु आप से महान् कोई और नहीं।।

३

जन्म मानो वृथा उसका संसार में
जो कि निज देश के काम आया नहीं।
कीट पशु पक्षी भी तो है उससे भले,
जिसने उपकार में मन लगाया नहीं।।
पाप की जिसमें हो चर्चा होवे गूंगी वो जुबान।
सुनते दुखियों की न फरियाद जो बहरे हों वे कान।।
जो न गिरतों को उठा लेते हाथ वे टूटें।
दिल बिना दर्द का जलजाए आँख वे फूटें।
देश के दुःख में जिन अधम आँखों ने
एक भी बूंद आँसू बहाया नहीं।।
पाप धोए नहीं गंगा नहाए तो क्या हुआ?
फंसे माया में हैं त्यागी कहाए तो क्या हुआ?
न लगा ध्यान ये टीके लगाए तो क्या हुआ!
गेरुँए रंग में कपड़े रंगाए तो क्या हुआ?
अपना मन अति चपल तूने प्यारे कभी,
आह! प्रभु प्रेम रंग में रंगाया नहीं।।
कवि गायक गुणी विद्वान् बना तो क्या बना
पंच मुखिया धनी श्रीमान बना तो क्या बना
मीर महाराज या सुल्तान बना तो क्या बना.
मल्ल बलवान रूपवान बना तो क्या बना?
जब प्रकाशार्य पाकर मनुज जन्म यह
अपना उत्तम चरित्र बनाया नहीं।।

४

मधुर ओम् का जप किए जा किए जा।
तू आधार उसका लिए जा लिए जा।
सदा अन्न भूखों को नंगों को कपड़ा,
जहाँ तक बने तू दिए जा दिए जा।।
घृणा द्वेष अभिमान से मानवों के,
हृदय फट रहे तू सिए जा सिए जा।
धरा धाम धन जाएँगे कुछ न संग में,
तू धन धर्म संग में लिए जा लिए जा।
सरस संयमी स्वस्थ स्वाधीन बनकर,
तू सौ वर्ष जग में जिए जा जिए जा।।
प्रकाशार्य चढ़के कभी जो न उतरे,
वही प्रेम प्याला पिए जा पिए जा।।

पाकिस्तानी हिन्दुओं का हुआ यज्ञोपवीत संस्कार

गुरुकुलों ने की बच्चों को गोद लेने की घोषणा

विनोद बंसल, मीडिया प्रमुख, इंद्रप्रस्थ विश्व हिंदू परिषद, दिल्ली

नई दिल्ली। पाकिस्तान से आये हिन्दुओं का वैदिक रीति से मूर्धन्य विद्वानों की उपस्थिति व आशीर्वाद के साथ यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद व विश्व हिन्दू परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में पाक हिन्दू परिवारों ने पूरे मनोयोग से भारत माता की वंदना कर व धर्म और राष्ट्र के उत्थान में अपने आप को समर्पित करने की प्रतिज्ञा की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष डॉ0 अनिल आर्य ने इस अवसर पर कहा कि हिन्दुओं के सोलह संस्कारों में से एक यज्ञोपवीत संस्कार अपने माता-पिता व गुरुजनों के उपकारों को सदा याद कराता है। पाकिस्तान से आये ये सभी बंधु-बान्धव अविभाजित भारत के अभिन्न अंग और हमारे जिगर के टुकडे हैं। इनकी हर प्रकार की व्यवस्था कराना हम सभी का धर्म है।

विस्तृत जानकारी देते हुए विहिप दिल्ली के मीडिया प्रमुख श्री विनोद बंसल ने बताया कि सभी पाकिस्तान पीड़ित हिन्दू परिवारों के प्रत्येक सदस्य ने यज्ञ में भाग लेने से पूर्व यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण किया। इसके पश्चात् प्रत्येक बच्चे को विद्यालय का बस्ता व किताब कापियां दी गई। पठन पाठन सामग्री देख कर बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा और अनेक बच्चे तो मन्दिर परिसर में ही अपने अपने ढंग से पढ़ने लग गए। द्वारिका सेक्टर 21 के पास भरथल गाँव में आयोजित इस कार्यक्रम में अनेक गुरुकुलों के आचार्य व व्यवस्थापकों के अलावा विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी भी उपस्थित थे। गुरुकुल खेड़ा खुर्द व गुरुकुल हसनपुर सहित अनेक गुरुकुलों ने बच्चों की नि:शुल्क शिक्षा.दीक्षा का प्रस्ताव भी रखा। नोएडा से आए डॉ0 डी के गर्ग ने परिवारों की हर प्रकार की स्वास्थ्य व आर्थिक मदद करने हेतु अपनी अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

इस अवसर पर जिला धर्म प्रसार प्रमुख श्री सुधीर कुमार, श्री नारायण सिंह, श्री विवेक कक्कड़, श्री नाहर सिंह, हिन्दू महा सभा के स्वामी जी, आर्यसमाज के श्री महेंद्र भाई, श्री राजीव कुमार, डॉ0 अग्नि वीर, श्री प्रताप मुनि जी, श्री अमन सिंह शास्त्री, श्री गज वीर सिंह आर्य, श्री भगत सिंह राठी सहित अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी व विद्वान उपस्थित थे।

पोरबंदर आर्यसमाज ने की नई 4 आर्यसमाजों की स्थापना

धनजी भाई आर्य, मंत्री आर्यसमाज पोरबंदर, गुजरात

आर्यसमाज पोरबंदर ने 9 से 14 अप्रैल तक अलग अलग ग्रामों में प्रचार कार्यक्रम रखा, जिनमें अंतर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी होशंगाबाद म 0 प्र0 एवं पंडित श्री नरेशदत्त जी आर्य बिजनौर उ0 प्र0 को आमंत्रित किया गया था। ग्राम देवड़ा, नवागांव, नवागढ़, सिमर, नागवदर, मीठापुर (द्वारिका) आदि ग्रामों में यज्ञ, भजन सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। इन सभी कार्यक्रमों में आचार्यश्री ने अपने प्रवचनों के माध्यम से लोगों को प्रेरित किया कि केवल आर्यसमाज के साथ मिलकर कार्य करने से ही व्यक्ति, समाज और देश की उन्नति हो सकती है, क्योंकि विश्व में केवल आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जो वेदों के उपदेश के आधार पर सर्वांगीण उन्नति करने का मार्ग प्रशस्त करती है। इनमें 4 स्थानों पर नव आर्यसमाज गठित की गई। इसके अतिरिक्त पोरबंदर जिला जेल तथा वकीलों के बार कौंसिल में आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी के व्याख्यान करवाए गए तथा पुस्तकालय के लिए साहित्य भेंट किया गया। मीठापुर में 51 जोड़ों के द्वारा 21 यज्ञवेदियों पर यज्ञ का प्रशिक्षण लिया गया। स्थानीय विधायक जी की उपस्थिति भी प्रेरणास्पद थी। लगभग 600 जनों के भोजन की स्थानीय संगठनों ने व्यवस्था की थी। यहाँ भी आर्यसमाज का गठन किया गया। पोरबंदर आर्यसमाज ने एक दिन नगर में शोभा यात्रा निकाल कर 'रत्नासागर भवन' में 11 अप्रैल को यज्ञ तथा सत्संग का कार्यक्रम रखा, जिसमे सायंकालीन सत्र में एस डी एम महोदय ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज की। 500 व्यक्तियों के लिए ऋषि लंगर की व्यवस्था दोनों समय थी। सभी गाँवों में निशुल्क साहित्य का वितरण किया गया।

आर्यसमाज के दोनों सुयोग्य पुरोहित श्री कृष्णकान्त जी एवं शिवकुमार जी ने विगत एक माह से अथक परिश्रम किया। अत: दान देने वाले, सहयोग करने वाले सभी महानुभावों के साथ प्रधान व मंत्री जी ने दोनों पुरोहितों का धन्यवाद किया।

मंदसौर की जेल में हुआ वेदों का प्रचार पिपलिया मंडी में 58 दम्पतियों ने की पूर्णाहुति

पंडित सत्येन्द्र आर्य, आर्य समाज पिपलिया मंडी

आर्य समाज पिपलिया मंडी ने स्वर्ण जयंती के अवसर पर 8 दिनों की वेद प्रचार रथ यात्रा का आयोजन किया, जिसके अंतर्गत 11 से 18 मई तक ग्राम बूढा, मुन्देरी, गुडभेली व पिपलिया मंडी सहित अनेक ग्रामों में प्रचार किया गया। अंतिम दिन पिपलिया मंडी आर्यसमाज के पंडाल में आनंद पुरुषार्थी यज्ञ के ब्रह्मा थे एवं 20 यज्ञ वेदियों पर 58 दम्पतियों ने श्रद्धापूर्वक पूर्णाहुति कर इतिहास रचाया। प्रतिदिन विभिन्न विद्वानों के भजन उपदेश प्रवचन होते रहे जिनमें पूज्य डॉ. सोमदेव शास्त्री मुंबई, आचार्य आनंद पुरुषार्थी होशंगाबाद, पं. सत्यपाल सरल देहरादून, पंडित नरेश दत्त आर्य, पं0कुलदीप आर्य बिजनौर आदि प्रमुख थे। अंतिम दिन ही मंदसौर की जिला जेल में लगभग 600 कैदियों के बीच में उपदेश का प्रोग्राम था। जेल के पुस्तकालय के लिए अधीक्षक महोदय को आर्य समाज की ओर से सत्यार्थ-प्रकाश भेंट की गई, जिसमे भारतीय किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष बनवारी लाल गुर्जर, जेल अधीक्षक श्री शाह जी, पंडित श्री सत्येन्द्र आर्य, महेश चन्द्र शर्मा , शिव नारायण आर्य पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी सहित वरिष्ठ नागरिक उपस्थित थे। इसके बाद भी प्रचार रथ यात्रा 29 मई (कुल 22 दिनों तक) चली जिसका समापन शास्त्रीजी के ग्राम निनोरा में हुआ।

श्री पन्नालाल आर्य को अश्रुपूरित श्रद्धांजली

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर राजस्थान के वरिष्ठ सदस्य श्री पन्नालाल जी आर्य का जन्म सन् १९५० उमें श्री मूलचन्द जी कसेरा के यहाँ हुआ। श्री पन्नालाल जी गठीले, छबीले आकर्षक व्यक्तित्त्व के धनी थे। यज्ञ, प्राणायाम स्वाध्याय आपकी जीवनचर्या के प्रमुख अंग थे।

सत्यार्थप्रकाश आपको पूरी तरह कण्ठस्थ था। आप श्री आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य जी के मित्रों में रहे हैं और अन्तिम समय तक उनके सम्पर्क में थे। आपका दाम्पत्य जीवन प्रेरणादायी और आदर्श रहा। आप सपरिवार आर्यसमाज के सभी बड़े सम्मेलनों में भाग लेते थे। २८ अप्रैल २०१३ को आर्यसमाज में आयोजित श्रद्धांजली सभा में प्रधान शंभूराम यादव, उपप्रधान श्री उदयशंकर व्यास, कोषाध्यक्ष श्री नरसिंह सोनी श्री धर्मवीर आदि ने उनके कृतित्त्व और व्यक्तित्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। शोक प्रस्ताव पढ़ते समय श्री महेश सोनी मंत्री का कण्ठ अवरुद्ध हो गया। अति संक्षिप्त बिमारी के पश्चात् श्री आर्य का निधन हो गया था। सभासदों ने दो मिनट का मौन रखकर परमेश्वर से परिजनों को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

-महेश सोनी, मंत्री

ओ३म्

फोन : २५२६०६ (दु०)
९४१६५४५५३८ (मो०)

सत्यम् स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो. सत्यव्रत आर्य सुपुत्र रमेश चन्द्र आर्य

नजदीक सत्यनारायण मंदिर, सुनार मार्किट,
मेन बाजार, जीन्द (हरि०)-१२६१०२

भिवानी में हमारे अधिकृत प्रतिनिधि
हर प्रकार का वैदिक साहित्य व अन्य धार्मिक साहित्य प्राप्त करने के लिए पधारिए

दीप प्रकाशन

(वैदिक साहित्य के प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता)
कृष्णा कालोनी, माल गोदाम रोड़ गली में,
भिवानी-१२७०२१ (हरियाणा)

नोट :

शांतिधर्मी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित साहित्य के लिए व शांतिधर्मी की वार्षिक, आजीवन सदस्यता के लिए भी संपर्क कर सकते हैं।

मोबाईल-६४१६१ ६४३७१
दिन में मिलने का स्थान-
आर्य समाज घंटाघर, भिवानी

ओ३म्

M- 98968 12152

रवि स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो० रविन्द्र कुमार आर्य
आर्य समाज मंदिर, रेलवे रोड़,
जीन्द (हरि०)-१२६१०२

MAHARSHI DAYANAND EDUCATION INSTITUTE

An Autonomous Institute Under the Control & Management of G.R.E.S.W. Society (Regd.) Bohal

202, OLD HOUSING BOARD, BHIWANI-127021 (HAR.)

I.T.I. की इलैक्ट्रिशियन, फीटर, वैल्डर, पलम्बर, मशीनिस्ट आदि सभी ट्रेड व अन्य डिप्लोमा कोर्स दूरवर्ती माध्यम से करने के लिए व अपने क्षेत्र में संस्थान का केन्द्र स्थापित करने के सम्पर्क करें।

संस्थान से I.T.I. कोर्स किये अनेक विद्यार्थी सरकारी/गैर सरकारी विभागों में कार्यरत हैं।

पंजीकृत कार्यालय सम्पर्क सूत्र :
09728004587, 09813804026
Website : www.grngo.org

सचिव : नरेश सिहाग, एडवोकेट
(पूर्व कानूनी सलाहकार, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड)
चैम्बर नं. 175, जिला अदालत, भिवानी-127021 (हरि.)
09255115175, 09466532152

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक चन्द्रभानु आर्य द्वारा अपने स्वामित्व में, ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६ १०२ (हरि०) से २४-५-२०१३ को प्रकाशित।

ओ३म्

महर्षि दयानंद, पतंजलि आदि ऋषियों की प्रेरणा से योग विज्ञान प्रसार हेतु

विशाल 'अष्टांग योग प्रायोगिक प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन

शिविर दिनांक व समय : 23 जून से 30 जून 2013 (7 दिवसीय आवासीय शिविर)
दोपहर 1 से 2 बजे, रात्री 9 से 10 बजे,

शिविर स्थल :

संस्कार भारती स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बगरू, अजमेर रोड, जिला जयपुर (राजस्थान) भारत

संपर्क सूत्र : आचार्य सानन्द, दूरभाष : 9928486575, 8302212355, 9352547258

प्रशिक्षक :

आचार्य सानन्द (ऋषि उद्यान, अजमेर) आचार्य कर्मवीर (ऋषि उद्यान, अजमेर)
रवि आर्य (योग शिक्षक],दिल्ली)

ईमेल info@vedic-dharma.com, ashok1977.kumawat@gmail.com,

वेबसाइट : www.vedic-dharma.com

ओ३म्

शांतिधर्मी के सदस्य बनने और शुल्क जमा कराने के लिए मिलें।

प्रकाश मेडिकल हाल

पटियाला चौक, जींद-126102

Regd. No. 108463

हर प्रकार की अंग्रेजी, देसी व आयुर्वेदिक दवाईयाँ
उचित मूल्य पर खरीदने के लिए पधारिए

Dr. S.P.Saini
(B.Sc. D. Pharma, आयुर्वेद रत्न)

M- 93549 55283
92552 68315

फेसबुक की दुनिया से

दुनिया मान रही संस्कृत का महत्त्व

दुनिया के 17 देशों में एक या अधिक संस्कृत विश्वविद्यालय संस्कृत के बारे में अध्ययन और नई प्रौद्योगिकी प्राप्त करने के लिए हैं, लेकिन संस्कृत को समर्पित उसके वास्तविक अध्ययन के लिए एक भी संस्कृत विश्वविद्यालय भारत में नहीं है।

संस्कृत के बारे में आश्चर्यजनक तथ्य .....

1 कंप्यूटर में इस्तेमाल के लिए सबसे अच्छी भाषा। संदर्भ : फोर्ब्स पत्रिका 1987.

2 सबसे अच्छे प्रकार का कैलेंडर जो इस्तेमाल किया जा रहा है, हिंदू कैलेंडर है, जिसमें नया साल सौर प्रणाली के भूवैज्ञानिक परिवर्तन के साथ शुरू होता है। संदर्भ : जर्मन स्टेट यूनिवर्सिटी

3 दवा के लिए सबसे उपयोगी भाषा अर्थात् संस्कृत में बात करने से व्यक्ति स्वस्थ और बीपी, मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल आदि जैसे रोग से मुक्त हो जाएगा। संस्कृत में बात करने से मानव शरीर का तंत्रिका तंत्र सक्रिय रहता है जिससे कि व्यक्ति का शरीर सकारात्मक आवेश के साथ सक्रिय हो जाता है।

संदर्भ : अमेरीकन हिन्दू यूनिवर्सिटी (शोध के बाद)

4 संस्कृत वह भाषा है जो अपनी पुस्तकों वेद, उपनिषदों, श्रुति, स्मृति, पुराणों, महाभारत, रामायण आदि में सबसे उन्नत प्रौद्योगिकी रखती है।

संदर्भ : रशियन स्टेट यूनिवर्सिटी

नासा के पास 60,000 ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियाँ हैं जो वे अध्ययन के लिए उपयोग कर रहे हैं। असत्यापित रिपोर्ट का कहना है कि रूसी, जर्मन, जापानी, अमेरिकी सक्रिय रूप से हमारी पवित्र पुस्तकों से नई चीजों पर शोध कर रहे हैं और उन्हें वापस दुनिया के सामने अपने नाम से रख रहे हैं।

दुनिया के 17 देशों में एक या अधिक संस्कृत विश्वविद्यालय संस्कृत के बारे में अध्ययन और नई प्रौद्योगिकी प्राप्त करने के लिए हैं, लेकिन संस्कृत को समर्पित उसके वास्तविक अध्ययन के लिए एक भी संस्कृत विश्वविद्यालय इंडिया (भारत) में नहीं है।

5 दुनिया की सभी भाषाओं की माँ संस्कृत है। सभी भाषाएँ (97 प्रतिशत) प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस भाषा से प्रभावित हैं।

संदर्भ : यूएनओ

6 नासा वैज्ञानिक द्वारा जारी एक रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका 6 और 7 वीं पीढ़ी के सुपर कंप्यूटर संस्कृत भाषा पर आधारित बना रहा है जिससे सुपर कंप्यूटर अपनी अधिकतम सीमा तक उपयोग किया जा सके। परियोजना की समय सीमा 2025 (6 पीढ़ी के लिए) और 2034 (7 वीं पीढ़ी के लिए) है, इसके बाद दुनिया भर में संस्कृत सीखने के लिए एक भाषा क्रांति होगी।

7 दुनिया में अनुवाद के उद्देश्य के लिए उपलब्ध सबसे अच्छी भाषा संस्कृत है।

संदर्भ : फोर्ब्स पत्रिका 1985

8 संस्कृत भाषा वर्तमान में 'उन्नत किर्लियन फोटोग्राफी' तकनीक में इस्तेमाल की जा रही है। (वर्तमान में उन्नत किर्लियन फोटोग्राफी तकनीक सिर्फ रूस और संयक्त राज्य अमेरिका में ही मौजूद है। भारत के पास आज 'सरल किर्लियन फोटोग्राफी' भी नहीं है।

9 अमेरिका, रूस, स्वीडन, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान और ऑस्ट्रिया वर्तमान में भरत नाट्यम और नटराज के महत्व के बारे में शोध कर रहे हैं।

10 ब्रिटेन वर्तमान में हमारे श्री चक्र पर आधारित एक रक्षा प्रणाली पर शोध कर रहा है।

पुस्तकें मंगाने वाले ग्राहकों के लिए जानकारी

मनोहर आश्रम की लोकप्रिय पुस्तकें छपकर तैयार हैं

सर्वजन हिताय! सर्वजन सुखाय!! के उद्देश्य से-

डॉ. मनोहरदास अग्रावत एन.डी. 'आयुर्वेद शिरोमणि'

द्वारा लिखित प्राकृतिक चिकित्सा की शोधपूर्ण पुस्तकें-

1- जीवन रक्षा, पृष्ठ 202 मूल्य 85 रुपए

2- स्वास्थ्य ज्योति, पृष्ठ 162 मूल्य 75 रुपए

इन स्वास्थ्य विषय की पुस्तकों पर-मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार और दिल्ली से चिकित्सकों के प्रशंसापत्र प्राप्त हैं। बिना ऑपरेशन पथरी, मोतियाबिन्द, बवासिर (मस्सा) आदि रोगों की सरल चिकित्सा एवं बालक, स्त्री, पुरुषों के प्रत्येक राग के सरल उपचार इन दोनों पुस्तकों में लिखे गए हैं। सर्पविष व बिच्छु विष उतारने के सरल व सफल उपचार हैं। दोनों पुस्तकें एक साथ मंगाने पर इनका मूल्य 160 रुपए। डाक मनिआर्डर से भेजने पर आश्रम की ओर से रजिस्ट्री डाक खर्च रुपए 25 होता है वह लगाकर पुस्तकें आपको भेज दी जाएंगी। वी.पी. भेजने का नियम अब नहीं है।

हमारे मो.बा.नं. 08989742047

हमारा पता- व्यवस्थापक-'मनोहर आश्रम' स्थान-उम्मैदपुरा

पो. तारापुर जावद)-458330, जिला-नीमच (म.प्र.)

ओ३म्

M.A. : 9992025406

P. : 9728293962

NDA No. : 236964

DL No. : 2064

अशोका मैडिकल हॉल

अशोक कुमार आर्य

Pharmacist, आयुर्वेद रत्न

R.M.P.M.B.M.S.

हमारे यहाँ पर नजला, पथरी, ल्यूकोरिया, शारीरिक कमजोरी, दाद, खारीश का आयुर्वेदिक देशी जड़ी बूटियों द्वारा ईलाज किया जाता है;

विशेष : हमारे यहाँ जीवन दायिनी च्यवनप्राश मिलता है।

अशोका मैडिकल हाल नजदीक वैद्य रामचन्द्र हस्पताल, पटियाला चौक, जीन्द

ओ३म्

शांतिधर्मी एक अद्वितीय पत्रिका है

इसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिये स्वस्थ और सुरुचिपूर्ण सामग्री होती है।

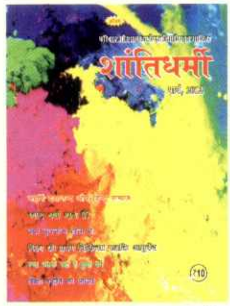

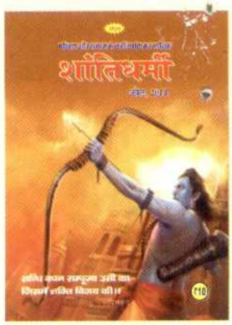

- शांतिध में धर्म-दर्शन के रहस्य, राष्ट्र व समाज की ज्वलंत समस्याओं पर अधिकारी विद्वानों के श्रेष्ठ विचार होते हैं।
- शांतिधर्मी भारतवर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास की झलक दिखाता है।
- शांतिधर्मी वह मार्ग दिखाता है, जिसे पाने के लिये लोग भटक रहे हैं। परिवार में समाज में सह-अस्तित्व व अन्तरात्मा में सुख शांति का संदेशवाहक है।
- शांतिधर्मी उस अध्यात्म का प्रचार करता है-जिसे अपनाने में देश-काल, जाति, मजहब, सम्प्रदाय की सीमाएँ आड़े नहीं आतीं। यह सच्चे ईश्वरीय ज्ञान का प्रचारक है।
- शांतिधर्मी स्वाध्याय भी है और स्वस्थ मनोरंजन का साधन भी।
- शांतिधर्मी प्रत्येक श्रेष्ठ-धार्मिक-राष्ट्रप्रेमी-मानवतावादी-व्यक्ति के लिये एक विचार-सूत्र है। प्रत्येक श्रेष्ठ परिवार का आभूषण है।

शांतिधर्मी पढ़िये-

अपने प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, ईश्वर के प्रति सर्वांगीण दायित्वों को जानिये।

जीवन के जटिल व गूढ़ रहस्यों को सहज ही सुलझाईये।

शान्तिधर्मी कार्यालय

756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक)

जीन्द-126102 (हरियाणा)

मो. 09416253826 E-mail : shantidharmijind@gmail.com